ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शांतिधर्मी

अक्तूबर, 2013

बढ़ी जा रही जिस तरह से अरुणिमा
है लगता कहीं पर हवन हो रहा है
मधुर मुक्त आभा, सुगन्धित पवन है
नये दिन का कैसा सृजन हो रहा है।

–डॉ. प्रभाकर शुक्ल

₹10

आर्यसमाज अहमदाबाद के तत्त्वावधान में कर्मफल सिद्धान्त शिविर का आयोजन वीर मंगल पाण्डे सभागार में किया गया। दर्शनयोग महाविद्यालय, रोजड़ के निदेशक पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक भारी संख्या में उपस्थित गणमान्य नागरिकों के मध्य प्रवचन करते हुए। (फोटो संजय प्रजापति)

आर्यसमाज नरवाना के तत्त्वावधान में आयोजित श्रावणी कार्यक्रम में वेदपाठ करती बालिकाएँ व उपस्थित जनसमूह

आर्यसमाज नूर नगर सिहानी गाजियाबाद के वार्षिकोत्सव का दृश्य

आर्यसमाज बीकानेर गंगायचा अहीर के सौजन्य से श्री करणसिंह यादव के सुपौत्र चि॰ हार्दिक कुमार (सु॰ श्री जितेन्द्र व श्रीमती निशा) का नामकरण संस्कार श्री धर्मवीर आर्य व श्री महादेव आर्य ने वैदिक विधि विधान से सम्पन्न कराया।

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

अक्तूबर, २०१३

वर्ष : १५ अंक : ६ आश्विन २०७०
सष्टि संवत्-१९६०८५३११४, दयानन्दाब्द : १९०

सम्पादक : चन्द्रभानु आर्य
(चलभाष ०८०५९६-६४३४०)
संयुक्त सम्पादक : सहदेव समर्पित
(चलभाष ०६४१६२-५३८२६)
उपसम्पादक : सत्यसुधा शास्त्री
प्रबंध संपादक : सुभाष श्योराण
आदरी सम्पादक : यज्ञदत्त आर्य
सह-सम्पादक : राजेशार्य आट्टा
डॉ० विवेक आर्य
नरेश सिहाग बोहल
सहयोग : आचार्य आनन्द पुरुषार्थी
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
विधि परामर्शक : जगरूपसिंह तंवर
कार्यालय व्यवस्थापक : रविन्द्रकुमार आर्य
कम्प्यूटर सज्जा : बिशम्बर तिवारी

मूल्य

एक प्रति	: १०.०० रु०
वार्षिक	: १००.०० रु०
आजीवन	: १०००.०० रु०

कार्यालय :
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक,
जीन्द–१२६१०२ (हरियाणा)
दूरभाष : ६४१६२–५३८२६
ई-मेल-shantidharmijind@gmail.com

प्रेरणा स्तम्भ

मैं अपना मन्तव्य उसी को जानता हूँ कि जो तीन काल में एक सा सबके सामने मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मत मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। –महर्षि दयानन्द

क्या? कहाँ?....

आलेख

ईश्वर है या नहीं? क्या कहता है विज्ञान? ६
मुजफ्फर नगी दंगा : सरकारी उदासीनता ११
बात तो छोटी सी नहीं थी १२
डॉ० रामनाथ वेदालंकार : व्यक्तित्त्व व साहित्य १३
छत्रपति शिवाजी महाराज की मुस्लिक नीति १५
ऐसे थे हमारे लाल बहादुर १७
सहज उपासना स्रोत (वेद संदेश) १८
फिर आचमन और मनसा परिक्रमा (संध्या रहस्य) २३
पकुति का वरदान तुलसी २५

कहानी/प्रसंग

प्रतीक्षा-२१, पेन्सिल की कहानी, क्या याद रखो-२७, छोटा सा पत्थर २८
कविताएँ- १०, २८,
स्तम्भ-आपकी सम्मतियाँ ५, सोम सरोवर ६ चाणक्य नीति, अमृतवचनावली ७, सीख हम सीखें युगों से-८ बाल वाटिका २६, भजनावली २६
साथ में : समाचार सूचनाएँ, मुंहासों पर कुछ प्रयोग

वेद-विचार

सामवेद आग्नेय पर्व

पद्यानुवाद : स्व० आचार्य विद्यानिधि शास्त्री

राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहि।
ईडिष्वा हि महे वृषन् द्यावा होत्राय पृथिवी।।९३।।

महिमामय भगवन्! हम तुमको दान हेतु संदीप्त करें।
सुखवर्षक हे देव! तुम्हारे सम्मुख अपनी मांग धरें।।
द्यौ पृथिवी दोनों को तुमने अग्निहोत्र हित दान किया।
सब धन वैभव हमको देकर बदले में कुछ भी न लिया।।

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

विजयादसमी का संदेश

❒चन्द्रभानु आर्य

❒क्षत्रिय पर्व विजयादसमी की सभी पाठकों को शुभकामनाएँ। यह एक प्राचीन वैदिक पर्व है, जिसमें क्षत्रियों द्वारा विजय और रक्षा अभियान प्रारम्भ किया जाता था। वर्षा ऋतु के पश्चात् मार्ग खुलने से यह सुविधाजनक भी था। क्षत्रिय जन्म से कोई जाति नहीं है, बल्कि वे ये लोग हैं जो न्याय से प्रजा की रक्षा का व्रत धारण करते हैं। मनुस्मृति में क्षत्रिय के कर्त्तव्य बताए हैं- न्याय से प्रजा की रक्षा, सब प्रकार से सबका पालन, विद्या, धर्म की प्रवृत्ति, सुपात्रों की सेवा में धनादि पदार्थों को व्यय करना, अग्निहोत्रादि करना व करवाना, वेदादि शास्त्रों का पढ़ना-पढ़ाना और जितेन्द्रिय रहकर शरीर और आत्मा के बल को बढ़ाना। भगवद्गीता में भी इसके गुणों का उल्लेख है- शौर्य=वीरता, तेज, धैर्य, दक्षता, युद्ध से पलायन न करना, दान और ईश्वरभाव।

❒बल के बिना न्याय की व्यवस्था, दण्ड व्यवस्था स्थापित नहीं हो सकती है और बल के बिना श्रेष्ठों का सत्कार और दुष्टों का तिरस्कार भी नहीं हो सकता है। सैन्य बल और शारीरिक बल के महत्त्व को हमारे पूर्वजों ने जान लिया था। इसी के बल पर वे सावैभौम चक्रवर्ती राज करते थे। आज संसार में प्रजाओं को जितने भी कष्ट हो रहे हैं वे सच्चे क्षत्रियों के अभाव में ही हो रहे हैं। आन्तरिक क्षेत्र तो असुरक्षित है ही=न दुष्टों को दण्ड का भय है, न सज्जनों को सुरक्षा की गारंटी; बाहरी सीमाएँ भी शत्रुओं से पदाक्रान्त हो रही हैं। समर्थ होते हुए भी हमारे सैनिक केवल सरकारी तंत्र की दुविधा के कारण शत्रुओं के हाथों मारे जा रहे हैं। पड़ोसी हमारे देश की भूमि पर अधिकार कर रहे हैं, किये हुए हैं। मुझे तो इस प्रसंग में स्वामी दयानन्द जी की बात याद आ रही है कि 'श्रीकृष्ण जी सदृश कोई होता तो इनके धुर्रे उड़ा देता।'

❒दशहरे पर रामलीलाओं और रावण फूँकने के आयोजनों में अरबों रूपये लगा देने वाला यह देश यदि एक अंश में भी राम के आदर्शों को अपना लेता तो आज भी यह देश विश्व गुरु होता। राम के क्षात्र धर्म को आज भी अपना लिया जाए तो यह देश अब भी सुवर्ण भूमि बन सकता है।

❒रावण को हर साल जला दिया जाता है, पर वह हर साल जीवित हो जाता है। वास्तव में तो वह लोगों के मनों में जिन्दा है। आज संसार का वातावरण ही इस प्रकार का हो गया है कि मनुष्य की कुप्रवृत्तियाँ बढ़ती ही जा रही हैं। सच्ची आध्यात्मिकता की अपेक्षा आडम्बर बढ़ रहे हैं। यही कारण है कि एक समुदाय के लोगों को दूसरे समुदाय के लोगों को मार डालने में ही धर्म की सेवा नजर आती है। व्यक्ति ईमान का सहारा लेकर पाप करता है, विश्वास लाने के कारण उसे दण्ड से बचने की गारंटी मिलती है तो वह पाप से क्यों डरे? यदि उसके पापों की निवृत्ति गंगा स्नान या 'गुरु' का नाम लेने से हो जाती है तो उसे पाप के फल का भय क्यों रहेगा? सभी प्रकार के ढोंग और पाखण्ड की अपेक्षा धर्म के नाम पर किये जाने वाले पाखण्ड ने मनुष्य जाति का सबसे अधिक नुकसान किया है क्योंकि उसने मनुष्य को मनुष्य ही न रहने दिया बल्कि उसकी आत्मिक उन्नति के सभी मार्ग बन्द कर दिये। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि मनुष्य अपने अन्दर की दुष्प्रवृतियों को पहचानें और उनका निराकरण करे।

❒दशहरा सच्चाई की विजय का प्रतीक कहा जाता है। सच्चाई की जीत तो होती ही है। सत्य कभी पराजित हो ही नहीं सकता। क्योंकि जो है वही तो सत्य है और रहेगा भी वहीं जो कि है, यही सत्य की विजय का अर्थ है। लेकिन इससे यह स्पष्ट नहीं है कि सत्य के पक्षधर का क्या होगा? सत्य और न्याय को स्थापित करने के लिए मनुष्य को लड़ना पड़ता है और यह आवश्यक नहीं है कि सत्य के लिए लड़ने वाला जीवित भी रहेगा या नहीं। वह सत्य के लिए लड़ता हुआ बलिदान देगा, वह नहीं लड़ेगा तो सत्य तिरोहित हो जाएगा। उसके बलिदान से सत्य की सत्ता स्थापित होगी, यही उसकी जीत होगी। क्षत्रियपर्व के सन्दर्भ में सत्य की विजय के इस दर्शन को अच्छे से समझ लेने की आवश्यकता है।

❒रावण के दस सिर होना तो ऐतिहासिक और तार्किक दृष्टि से किसी भी तरह संभव नहीं है। पता नहीं वह कैसे सोता होगा? कैसे खाता होगा? रावण के दश आनन होने की प्रतीकात्मकता यही है कि उसकी दृष्टि दसों दिशाओं में रहती होगी। आखिर लंका एक समृद्ध राज्य था और किसी राज्य का सब प्रकार से समृद्ध होना राजा की सतर्क दृष्टि के बिना कैसे संभव है?

❒दशानन को जीतना= आध्यात्मिक दृष्टिकोण से हम इसका अर्थ यह भी समझ सकते हैं कि अपनी दस इन्दियों को जीते बिना किसी और को जीतने की कल्पना करना भी निरर्थक है। सबसे महत्त्वपूर्ण है अपने आप पर विजय प्राप्त करना, तभी किसी अन्य पर विजय प्राप्त करने की कल्पना की जा सकती है।

आपकी सम्मतियाँ

कलम के एक सच्चे सिपाही की भांति आप पत्रकारिता धर्म का पूरी निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ पालन करते हुए समाज को एक नई दिशा एवं रोशनी प्रदान कर रहें हैं। हमारा मानना है कि इस अत्यन्त ही महत्वपूर्ण काम के लिए सम्पूर्ण समाज आपका सदैव आभारी रहेगा। कृपया विजय दशमी एवं दीपावली के पावन पर्व के शुभ अवसर पर हमारी ओर से हार्दिक बधाइयाँ स्वीकार करने की कृपा करें।

डॉ० जगदीश गांधी
संस्थापक प्रबंधक सिटी मोंटेसरी स्कूल,
२०२ स्टेशन रोड, लखनऊ

शांतिधर्मी का अगस्त अंक पढ़ा। छपाई, सफाई, कागज तथा बहुरंगा मुखपृष्ठ बहुत आकर्षक और सर्वोत्तम लगे। साथ ही एक अंक १०/- और वार्षिक १००/- मात्र, इस समय अत्यंत सस्ता है। सम्पादकीय 'यह कैसी आजादी?' बहुत ही मार्मिक आलेख लगा। डॉ० विवेक आर्य का लेख 'धर्म और उसकी आवश्यकता' श्री राजेश आर्य का 'लो प्रणाम ओ! वीर सपूतो!' मुझे बहुत ही प्रिय लगे। लेखन शैलीगजब है। डॉ० भवानीलाल भारतीय का 'सत्य क्या है?' बहुत ही महत्त्वपूर्ण आलेख है। सत्यसुधा शास्त्री का लेख 'सच्ची तीर्थ यात्रा' छोटा है, पर अत्यंत मार्मिक है। नि:शुल्क चिकित्सा करने के कारण मेरे पास समयाभाव रहता है पर इस अंक को मैंने तेज रोशनी में रात में १२ बजे तक पढ़कर दो दिन तक इस महान साहित्य का आनन्द लिया।

डॉ० मनोहर दास अग्रावत
मनोहर आश्रम स्थान उम्मैदपुरा
पो० तारापुर (जावद)४५८३३०, जिला नीमच (म० प्र०)

आप द्वारा प्रेषित शांतिधर्मी यथासमय प्राप्त हो गया था। इस अंक को देखकर पत्रिका की परिपक्वता की प्रतीती होती है। फिर भी मात्र एक अंक के आधार पर सम्मति निर्धारण करना शायद उचित न हो। हाँ, 'पूत के पांव पालने' वाली लोकोक्ति की दृष्टि से भविष्य उज्ज्वल ही दृष्टिगोचर होता है। यह शुभ संकेत है कि आलेखों में विविधता है। यदि एक एक संक्षिप्त लेख राजनीति और आर्थिक विषय पर भी हो तो पत्रिका की उपयोगिता बढ़ जाएगी। जहाँ तक कहानी और कविताओं का प्रश्न है, युगानुसार हों तो अच्छा है। पुरातन आर्य कवियों की कविताओं का प्रकाशन अच्छी बात है- किन्तु वे यदि संक्षिप्त हों तो अच्छा रहेगा। नाथूराम शंकर शर्मा, कुंवर सुखलाल, स्वामी भीष्म जी तथा प्रकाशचन्द्र जैसे ख्यातिप्राप्त कवियों के संकलनों को स्थान दिया जा सकता है।साथ ही दिनकर, महादेवी, माखनलाल चतुर्वेदी तथा सुभद्राकुमारी चौहान की कविताओं को भी संक्षिप्त रूप में स्थान दिया जा सकता है। आज की कहानी का फलक भी परिवर्तित हो गया है, अत: नये कहानीकारों की कहानियों को यदा कदा स्थान दिया जा सकता है । विषय सूची से लगता है कि आप इस विषय में सचेत हैं। सैद्धान्तिक लेख तो होने ही चाहिएँ। सुखी एवं दीर्घ जीवन तथा संध्या रहस्य आलेख अच्छे हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ, छपाई तथा टाईप व कागज भी संतोषजनक हैं। कभी कभार किसी महापुरुष की जीवनी भी प्रकाशित कर सकें तो उपयोगी होगा। यह ध्यान रहे कि पत्र पत्रिकाएँ किन्हीं कारणों से 'दम तोड़' देती हैं। इसलिए इस दिशा में सतर्कता बरतें। वैसे १५ वर्ष के जीवन से पत्रिका की दीर्घायु का संकेत शुभ है। सम्पादक मण्डल को मेरी शुभकामनाएँ व हार्दिक बधाई! प्रभु आपको शक्ति दे, जिससे आप सत्पथ पर चलते हुए निरन्तर सफलता प्राप्त करते रहें।

डॉ० सहदेव वर्मा
२४/४ बिशन स्वरूप कालोनी
पानीपत-१३२१०३

शांतिधर्मी का सदस्यता शुल्क जमा कराएँ

बैंक	: **स्टेट बैंक ऑफ पटियाला**	बैंक	: **पंजाब नैशनल बैंक**
खाताधारक का नाम	: शांतिधर्मी मासिक	खाताधारक का नाम	: सहदेव सिंह
ब्रांच कोड	: 50257	ब्रांच कोड	: 327900
IFSE कोड	: STBP 0000257	IFSE कोड	: PUNB0327900
खाता नं०	: 65157442062	खाता नं०	: 3279000100145556

कृपया सदस्यता शुल्क जमा करा कर 9416253826 पर सूचित अवश्य करें

लहर पर सवार

❑पं० चमूपति जी

परिप्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरुर्मावधिश्रितः।
कारुं बिभृत्पुरुस्पृहम्।।१०।।

ऋषिः - असितः = बन्धन रहित

(सिन्धोः) समुद्र की (ऊर्मौ) लहर पर (अधिश्रितः) सवार हुआ हुआ (कविः) क्रान्तदर्शी (पुरुस्पृहम्) लोकप्रेम की (कारुम्) तंत्री को (बिभ्रत्) उठाए हुए (परिप्रासिष्यदत्) चारों ओर बह गया।

जो मनुष्य आत्मदर्शी हो गया, जिसका विचार अपने और कुटुम्ब आदि के हित तक परिमित न रहकर सारे ब्रह्माण्ड पर व्याप्त हो गया, वह मानो अपनी भावना की लहर पर सवार हो गया। उसके हृदय समुद्र में निरन्तर लोकोपकार की तरंगें उठती रहती हैं और वह उन तरंगों की गोद में बैठा हुआ कभी इधर-कभी उधर बहता जा रहा है। उसका जीवन एक सुरीला राग हो गया है। विश्व प्रेम की तानें उसके अंग से उठ रही हैं। अब उसे किसी साज की, सामान की आवश्यकता नहीं रही। उसके योग-क्षेम प्रत्येक दिन के अन्न-पान आदि का प्रबंध तो स्वयं प्रभु कर ही देंगे। जैसे जंगल का पक्षी बिना किसी चिन्ता के हवा के झकोरों में उड़ता फिरता है- वह गाता है, चहचहाता है, उसके शरीर की यात्रा जंगल में उग रहे फल फूलों से अपने आप हो जाती है। यही अवस्था प्रभु के प्यारे की है। उसे किसी सम्पत्ति का संचय नहीं करना। उसे अपने आप को रुपये-पैसे का चौकीदार नहीं बनाना। वह गगन बिहारी बादल है जो उड़ता है, फिरता है, लोक-लोकान्तर, देश-देशान्तर की सैर करता है, गरजता है, बरसता है, प्रभु भक्ति का गीत सारे संसार के कर्ण कुहर में डालता है।

उसकी वाणी में जादू है। लोग विरोध के लिए जाते हैं और उसके राग के मद से मस्ताने हो जाते हैं। उसका गीत उनके हृदयों में मानो घर कर जाता है। जिस सन्देश को कटु समझ कर उसके विरोध की आयोजनाएँ कर रहे थे, वह सन्देश सुनने पर मधुर प्रतीत होने लगता है। हृदय कह उठता है- यह राग मेरा है। जिन्हें अध्यात्म का ज्ञान नहीं, जो सामान्य पण्डितों के मुख से आत्मा परमात्मा की चर्चा सुनने पर हंसी उड़ाते थे, मखोल करते थे, सन्त के मुख से वही चर्चा सुनकर झूमने लगते हैं।

दिल से निकली हुई बात दिलों में ही प्रवेश कर जाती है, मानो किसी अन्दर की तह को हिला देती है। हृदय विवश होकर बोल उठता है-वाह! वाह!! तर्कणा साथ दे-न दे! भावना इस राग को अपनाती है और अपने मीठे सुरीले स्वरों के पंखों पर ले उड़ती है। सन्त के मुख से निकला हुआ वाक्य फिर-फिर दोहराया जाता है। अर्थ पीछे समझ में आता है। उसके अक्षरों की रचना में ही कोई मोहिनी सी प्रतीत होती है जिसके लिए भावुक प्रजा के हृदय लालायित होते हैं।

यह कहानी संसार के इतिहास में लाखों बार दोहराई गई। वही हृदय-'सिन्धु' है। उसकी 'ऊर्मियाँ' हैं-लहरें हैं। वही पुरानी लहरें हैं, जो नित नई हैं। इन लहरों की तंत्री पर, हे मेरे जीवन गान के गवैये! मुझे बैठा दे। इस झूलने के झकोरों में मुझे झुला दे। मुझे अपनी सारी सुध बुध बिसरा दे। हाँ! अपना मस्ताना, अपना दीवाना बना दे! एक बार, एक पल, एक क्षण!

वित्तेन रक्ष्यते धर्मो विद्या योगेन रक्ष्यते।
मृदुना रक्ष्यते भूपः सत्स्त्रिया रक्ष्यते गृहम्।।९।।

धन से धर्म की रक्षा करे। यदि मनुष्य धन का प्रयोजन समझ कर कमाए तो धन कभी हानिकारक नहीं होगा। उसे यह ध्यान में रखना चाहिए कि वह धन कमा रहा है धर्म के लिए। योग साधना के द्वारा विद्या की रक्षा करे उसको बढ़ाए। विद्या का उद्देश्य अन्ततः आत्मप्राप्ति ही है। योगसाधना करने से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। मृदुता=नम्रता से राजा की रक्षा करे अर्थात् श्रेष्ठ राजा के प्रति मृदु भाव अपनाए। श्रेष्ठ, विदुषी, बुद्धिमती स्त्री से घर-परिवार की रक्षा और उन्नति होती है।

दारिद्र्यनाशनं दानं शीलं दुर्गति नाशनम्।
अज्ञाननाशिनी प्रज्ञा भावना भयनाशिनी।।१०।।

दान करने से गरीबी दूर होती है। सदाचार से दुर्गति समाप्त होती है, सुख आता है। प्रज्ञा=शुद्ध बुद्धि से अज्ञान का विनाश होता है। निर्भयता की दृढ़ भावना से भय नष्ट होता है।

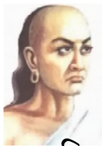

चाणक्य-नीति

पंचमोऽध्यायः

नाऽस्ति कामसमा व्याधिर्नाऽस्तिमोहसमो रिपुः।
नाऽस्ति कोपसमो वह्निर्नाऽस्ति ज्ञानात्परं सुखम्।।११।।

काम के समान अन्य कोई रोग नहीं है। मोह के समान कोई शत्रु नहीं है। क्रोध के समान अग्नि नहीं है। ज्ञान से बढ़कर सुख नहीं है।

जन्ममृत्यू हि यात्येको भुनक्त्येकः शुभाशुभम्।
नरकेषु पतत्येकः एको याति परां गतिम्।।१२।।

जीवात्मा अकेला ही जन्म और मृत्यु को प्राप्त होता है। अकेला ही शुभ-अशुभ कर्मों के फल का भोग करता है। अकेला ही नरक रूप महान् दुःख को प्राप्त होता है और अकेला ही परम गति=मोक्ष को प्राप्त करता है। दूसरा कोई सांसारिक साथी उसके साथ नहीं जाता। इसलिए मनुष्य को सांसारिक उन्नति करते हुए आत्मोन्नति के लिए प्रयत्न अवश्य करना चाहिए।

अमृत वचनावली

स्त्री पुत्रादिगतं प्रेम त्यजत्यापदगतो नरः।
यथार्थमीक्षतेऽत्यर्थं तरत्येतेन संगतः।।७८।।

जब मनुष्य संकट में होता है उस समय भार्या और संतान का प्रेम भी फीका पड़ जाता है और परम सत्य ही उस समय नजर आता है जो एकमात्र उसका सहारा बनता है।

क्षणिकं बाह्य-सौन्दर्यं क्षीयते यदहर्निशम्।
अन्तः पावित्र्यसौन्दर्यं नितरां वर्धतेतराम्।।७९।।

चमड़ी की बाहरी सुन्दरता एकसार नहीं रहती। वह उत्तरोत्तर घटती जाती है, लेकिन आन्तरिक सुन्दरता समयानुसार बढ़ती जाती है।

न शास्त्रं न च सिद्धान्तः भक्तिर्भक्तसुधामयी।
रहस्यवेदी सततं भक्तेर्भक्तिरसान्वितः।।८०।।

भक्ति कोई शास्त्र नहीं, मात्रा है। यह कोई सिद्धान्त नहीं, बल्कि जीवन का रस है। भक्ति में

प्रीतिशतकम्

❑डॉ० रामभक्त लांगायन
आई ए एस (सेवानिवृत्त)

डूबकर ही भक्ति के राज=रहस्य को समझा जा सकता है।

सक्षमा मजनू-दृष्टिर्लैला रूपविलोकने।
भक्त एव समर्थोऽस्ति भगवद्रूपदर्शने।। ८१।।

जैसे मजनू के बिना दूसरा कोई लैला के रूप को नहीं देख सका, उसी प्रकार भक्त के बिना दूसरा कोई परमात्मा को नहीं देख सकता।

संज्ञानज्ञाननाशिन्या कृतं मदिरया तथा।
ईश-प्रेम-सुरां पीत्वा रमते नितरां सुधी।।८२।।

परमात्मा एक अनूठी शराब है। मदिरा पीने से तो मनुष्य का होश=विवेक खराब होता चला जाता है, लेकिन परमात्मा रूपी शराब पीने से भक्त की बुद्धि तीव्र होती चली जाती है।

सीख हम सीखें युगों से

❑डॉ0 विवेक आर्य

अंग्रेजों ने पेड़ को जला डाला :

चन्द्रशेखर आजाद का नाम स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले वीर क्रांतिकारियों में अग्रगण्य है। ईलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में अकेले अंग्रेजी सैनिकों से लोहा लेने वाले आजाद ने अपनी अंतिम गोली से अपने जीवन का बलिदान कर दिया था। जिस वृक्ष के पीछे आजाद ने अपने प्राण त्यागे थे वह फूलों से लदा था और पेड़ पर कई जगह लोगों ने 'आजाद पार्क' आदि लिख दिया था, जिसकी लोग पूजा किया करते थे। कुछ ही दिनों में वहाँ एक मेला प्राय: नित्य ही लगने लगा जिससे कुपित होकर अंग्रेज अधिकारियों ने जड़-मूल से उस वृक्ष को उखड़वा कर जलवा दिया। जिस स्थान पर आजाद का रक्त गिरा था, उसकी मिट्टी कॉलेज तथा यूनिवर्सिटी के विद्यार्थी उठा ले गये थे। (सन्दर्भ- पृष्ठ 89, अमर शहीद सरदार भगत सिंह-लेखक क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल)

इस विवरण से हमें अंग्रेज सरकार की घटिया मानसिकता का पता चलता है। आजाद को तो उनकी वीरता के लिए आज भी स्मरण किया जा रहा है, पर न जाने ऐसे कितने गुमनाम क्रान्तिकारी होंगे जिनके चिह्न अंग्रेजों ने अपनी घटिया मानसिकता के चलते धूल में मिला दिये। स्वतंत्र भारत उन्हीं महान आत्माओं का ऐसा चिह्न है जिसे वे कभी नहीं मिटा सकेंगे।

मनुष्य शाकाहारी है या मांसाहारी

प्रसिद्ध वैज्ञानिक डॉ0 स्वामी सत्यप्रकाश जी द्वारा मनुष्य को प्राकृतिक रूप से शाकाहारी सिद्ध करने के लिए एक परीक्षण किया था। उन्होंने गौओं से भरे हुए बाड़े में मानव शिशु को छोड़ दिया। सभी गौएँ आराम से चरती रहीं और किसी ने कोई प्रतिक्रिया नहीं दी। उसी बाड़े में उन्होंने शेर के एक छोटे शावक को छोड़ दिया, उसे देख कर सभी गौएँ ठिठक गईं और चरना छोड़कर रक्षात्मक रूप से खड़ी होकर उसे एक टक घूरने लगीं।

इस परीक्षण से यही सिद्ध हुआ कि मनुष्य स्वाभाविक रूप से शाकाहारी है, इस बात को पशु भी जानते हैं।

डॉ0 खुशी राम का अमर बलिदान

शोरकोट, जिला झंग, वर्तमान में पाकिस्तान में आर्य समाज की स्थापना के कुछ काल के पश्चात् 1925 में आर्य पुत्री पाठशाला की स्थापना करने का निश्चय किया गया। पाठशाला के संचालक और कर्ता-धर्ता असिस्टेंट सर्जन डॉ0 खुशीराम जी थे। आपकी इतनी योग्यता के बाद भी आप आर्य पुत्री पाठशाला के लिए चन्दा एकत्र करने में संकोच नहीं करते थे। आपकी मृत्यु भी झांगामांगा रेलवे स्टेशन पर आर्य पुत्री पाठशाला के लिए चन्दा एकत्र करते हुए ट्रेन के नीचे आकर हुई थी। नारी जाति की शिक्षा और उत्थान के लिए अपने जीवन को न्योछावर करने वाले डॉ0 खुशीराम को नमन।

स्वामी दयानंद के अनेक सिपाहियों ने अपने प्राण समाज सुधार के महान यज्ञ में आहूत किये हैं। महान योगी के महान पद चिह्नों पर चलने का यह समर्पण-भाव हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा।

पं0 लेखराम की पीड़ा

अपने बलिदान से 3-4 वर्ष पहले पंडित लेखराम आर्य-समाज लुधियाना के वार्षिक उत्सव पर पधारे। पंडितजी को इस्लाम विषय पर अपना भाषण देना था। पंडितजी को अपने भाषण से 15-20 मिनट पहले पेट में बहुत जोर से दर्द उठा कि पंडित जी को उत्सव का मंडप छोड़ना पड़ा। तत्काल चिकित्सक को बुलाया गया। आर्य-जन पंडित लेखराम जी की अत्यधिक व्याकुलता को देख कर असमंजस की स्थिति में आकर सोचने लगे कि पंडित जी इतने वीर और धीर पुरुष हैं परन्तु दर्द से इतने ज्यादा व्याकुल हो रहे हैं। परन्तु चिकित्सक के आने पर पंडितजी की व्याकुलता के विषय में पता चला कि उनकी व्याकुलता का कारण उनके पेट में उठा दर्द नहीं था, अपितु पंडितजी इस बात से चिन्तित थे कि जो मुसलमान उनका व्याख्यान सुनने के लिये उत्सव में शामिल हुए हैं वे कहीं निराश होकर वापिस न चले जायें।

पंडितजी ने चिकित्सक से आते ही निवेदन किया कि उन्हें तत्काल दर्द से मुक्ति दिलाकर व्याख्यान के योग्य कर दे। चिकित्सक के इंजेक्शन देते ही उनकी पीड़ा समाप्त हो गयी और उसके पश्चात् पंडित जी ने ऐसा व्याख्यान दिया जो कि इतिहास में चिरस्थायी रहेगा।

व्याख्यान क्या था? शेर की गर्जना थी।

पंडित जी के व्याख्यान से सम्पूर्ण उत्सव की शान और प्रभाव कई गुना बढ़ गया।

(सन्दर्भ-आर्यसमाज लुधियाना का सचित्र पचास वर्षीय इतिहास)

ईश्वर है या नहीं! क्या कहता है विज्ञान?

ईश्वर तत्त्व विज्ञान शिविर, दिनांक ११, १२ व १३ नवम्बर २०१३

गॉड पार्टिकल को नोबेल पुरस्कार मिलने से यह विषय और भी महवपूर्ण हो गया है। सभी वक्ताओं के तर्कों तथा स्टीफन हॉकिंग की वैज्ञानिक युक्तियों का उत्तर देने में आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक भी किसी शास्त्र को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं करेंगे।

मानव किसी न किसी रूप में एक अदृश्य सर्वशक्तिमती सत्ता के अस्तित्त्व को सृष्टि के आदि काल से मानता आया है। विगत शताब्दी के कई महान् वैज्ञानिक- जिनमें सर अल्बर्ट आइंस्टीन एवं रिचर्ड पी० फाइनमैन जैसे अतीव प्रख्यात भौतिक विज्ञानी भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार करते रहे हैं। वर्तमान जगत् के स्टीफन हॉकिंग लगभग तीन वर्ष पूर्व तक ईश्वर के अस्तित्त्व को मानते थे परन्तु अब अकस्मात् अपनी पुस्तक The Grand Design मे ईश्वर की सत्ता को सर्वथा नकारकर विश्व भर के ईश्वरवादियों का खुला उपहास कर रहे हैं और उनकी इस पुस्तक को पाश्चात्य मानसिकता वाले भारतीय मीडिया व प्रबुद्ध वर्ग ने हाथों-हाथ लपक कर ऐसे प्रचारित किया, मानो करोड़ों वर्ष में यह बड़ी भारी वैज्ञानिक खोज हो। हमारे पूज्य आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक ने इस पुस्तक को पढ़कर देखा तो हॉकिंग के विचारों की नितान्त दुर्बलता, संकीर्णता व व्यर्थ अहंकार की जानकारी मिली। ऐसे विकट व संशय भरे वातावरण में क्या आपके मन-मस्तिष्क में भी ये प्रश्न उठते हैं कि-

१- ईश्वर नाम का कोई पदार्थ सृष्टि में है, वा नहीं? स्टीफन हॉकिंग अथवा अन्य किसी भी वैज्ञानिक द्वारा ईश्वरवाद के खण्डन के पीछे मूल कारण क्या है?

२- यदि ईश्वर नामक कोई सत्ता ब्रह्माण्ड में है तो उसका गुण-धर्म-स्वरूप कैसा होना चाहिए? ईश्वर क्या केवल आस्था करने की वस्तु है अथवा उसका कोई ठोस वैज्ञानिक स्वरूप भी है?

३- यदि ईश्वर नामक पदार्थ वास्तव में है, तो उसके नाम पर विश्व में विभिन्न सम्प्रदायों में इतने गंभीर मतभेद क्यों हैं? तथा उसके मानने वालों में, यहाँ तक कि ईश्वर-विषय के गम्भीर व्याख्याताओं में परस्पर वैर-विरोध तथा कथनी व करनी का भारी भेद वा मिथ्या छल कपट आदि क्यों हैं? जबकि विज्ञान के नाम पर ऐसा कहीं नहीं देखा जाता, सिवाय किसी अपवाद के।

४- कहीं ऐसा तो नहीं है कि जिस ईश्वर के नाम पर संसार भर में जो दिखाई दे रहा है, ऐसा कोई ईश्वर इस ब्रह्माण्ड में हो ही नहीं।

इन्हीं सब बिन्दुओं को ध्यान में रखते हुए वैदिक जगत् के प्रख्यात् वेद एवं वर्तमान-विज्ञान गवेषक पूज्य आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक द्वारा स्टीफन हॉकिंग के अनीश्वरवाद की तार्किक, वैज्ञानिक समीक्षा करके ईश्वर के अस्तित्त्व की सिद्धि एवं उसके वास्तविक वैज्ञानिक स्वरूप व गुण-धर्म को तार्किक व वैज्ञानिक रीति से प्रतिपादित किया जायेगा।

हम आपसे, विशेषकर अति प्रतिभाशाली वैज्ञानिक दृष्टि वाले युवकों, प्रोफेसर्स, इंजीनियर्स, डॉक्टर्स, प्रख्यात शिक्षाविद्, शासकीय अधिकारी, कर्मचारी, प्रबुद्ध व्यापारी, समाजसेवी, पत्रकार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के संवाददाता आदि का आह्वान करते हैं कि वे इस शिविर में पधारकर पूर्ण निष्पक्ष व वैज्ञानिक विवेचना का लाभ उठायें। हमारा यह भी निवेदन है कि यदि आप में से कोई भी प्रतिभाशाली अनीश्वरवादी इस शिविर के उद्घाटन समारोह में ईश्वरवाद के खण्डन में वैज्ञानिक युक्तियों से पुष्ट व्याख्यान देना चाहेंगे, तो उन्हें कुल मिलाकर दो घंटे का समय दिया जाएगा। उसके उपरान्त आचार्य जी उन वक्ताओं तथा स्टीफन हॉकिंग की पुस्तक में दी हुई सभी युक्तियों का उत्तर देंगे।

हम उन बन्धुओं को भी मत, सम्प्रदाय, वर्ग, देश, भाषा के सभी मतभेद भुलाकर इस शिविर में आमंत्रित करना चाहेंगे, जो ईश्वर, खुदा, गॉड आदि के नाम पर धार्मिक रीति-रिवाजों को तो मानते हैं, परन्तु वे विज्ञान के तर्कों से भयभीत भी हैं अथवा उन्हें स्वयं ईश्वर आदि के अस्तित्त्व पर गंभीर शंकाएं हैं, जिन्हें अपनी मजहबी कट्टरता अथवा सामाजिक निन्दा के भय से व्यक्त नहीं करते। स्मरण रहे कि यदि ईश्वर है तो सबको निष्पक्ष रूप से मानना ही चाहिए और यदि नहीं है तो सबको ही उसके नाम पर व्यर्थ आडम्बर छोड़ देना चाहिए। यदि ईश्वर नहीं है तो संसार के सभी सम्प्रदाय मिथ्या सिद्ध होंगे और यदि ईश्वर है तो भी वह एक ही होगा, उसका एक ही वैज्ञानिक

स्वरूप होगा। तब भी उसके नाम पर भेदभाव, अमानवीयता का होना सम्भव नहीं।

आईये! इस गम्भीर विषय में उदार हृदय से आचार्य जी के विचारों का श्रवण करके अपने आत्मा व मस्तिष्क को जो भी उचित प्रतीत होवे, अपना कर मानवता की रक्षा में सहयोग देवें। यह कार्यक्रम कार्तिक, शुक्ल, ९, १०, ११ तदनुसार दिनांक ११, १२, १३ नवम्बर, २०१३ को प्रख्यात वक्ता राष्ट्रचिन्तक पूज्य आचार्य श्री धर्मबन्धुजी महाराज, राजकोट (गुजरात) के मुख्य आतिथ्य एवं माननीय श्री टी०सी० डामोर साहब, पुलिस महानिरीक्षक, उदयपुर तथा पदस्थापित वाइस चांसलर, श्री राजीव गांधी जन जाति विश्वविद्यालय, उदयपुर की अध्यक्षता में होगा।

जो महानुभाव इस शिविर में आना चाहते हैं वे आत्म विवरण (Bio-Data) ई-मेल, स्पीड पोस्ट अथवा पंजीकृत डाक से भेजकर पंजीकरण अवश्य कराने का कष्ट करें। जो प्रतिभाशाली युवा विद्वान् ईश्वरवाद का खण्डन वैज्ञानिक युक्तियों से करना चाहेंगे, वे अपना लेख भी इसी के साथ प्रेषित करने का कष्ट करें। अनीश्वरवादी लेखों में से अधिकतम ५ लेखकों को बोलने का समय दिया जाएगा। हम चाहेंगे कि वक्ता उच्च कोटि के वैज्ञानिक तर्कों से ही युक्त लेख भेजें। हम उनमें से उच्चतर स्तर के लेखकों को बोलने का समय देंगे तथा शेष को श्रोता के रूप में पधारने का आग्रह करेंगे। ध्यान रहे कि अपने वक्तव्य में वक्ता किसी सम्प्रदाय के ग्रंथ वा वैज्ञानिक के विचार को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं करेंगे। हाँ, उन ग्रंथों अथवा वैज्ञानिकों की युक्तियों को तार्किक ढंग से अवश्य प्रस्तुत करें। सभी वक्ताओं के तर्कों तथा स्टीफन हॉकिंग की वैज्ञानिक युक्तियों का उत्तर देने में आचार्य श्री अग्निव्रत जी नैष्ठिक भी किसी शास्त्र को प्रमाण के रूप में प्रस्तुत नहीं करेंगे। हाँ, शास्त्र की वैज्ञानिक युक्ति-युक्तता को प्रतिपादित अवश्य कर सकते हैं। अति सीमित संसाधनों के कारण स्थान सीमित हैं, इस कारण पंजीकरण व स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लें।

निवेदक
मंत्री, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास
(वैदिक एवं आधुनिक भौतिक विज्ञान शोध संस्थान)
वेद विज्ञान मंदिर, भागलभीम, भीनमाल,
जिला-जालोर (राजस्थान) पिन-३४३०२९
दूरभाष-
कार्यालय : ०९८२९१४८४००, मंत्री : ०७७४२४१९९५६
Website : www.vaidicscience.com
E-mail : swamiagnivrat@gmail.com

विनम्र निवेदन : वेद विज्ञान के महत्तम कार्य में पवित्र आय वाले दानवीर महानुभाव अपनी सामर्थ्यानुसार दान दे सकते हैं। उनका हार्दिक स्वागत है। कृपया आप अपना चैक/ड्राफ्ट/धनादेश, ''प्रमुख, श्री वैदिक स्वस्ति पन्था न्यास'' PAN No. AAATV7229A के नाम (केवल खाते में देय) भेजने का कष्ट करें, साथ ही अपना नाम व पता साफ अक्षरों में लिखकर अवश्य भेजने की कृपा करें। पंजाब नैशनल बैंक, शाखा-भीनमाल, IFS Code : PUNB0447400 खाता सं० 4474000100005849 में ऑन लाइन भी आप धन जमा करवा सकते हैं, ऐसा करने वाले महानुभाव अपना नाम व पता दूरभाष द्वारा तत्काल सूचित करने का कष्ट करें

नोट : न्यास को दिया हुआ दान आयकर अधिनियम की धारा ८०-जी के अन्तर्गत कर मुक्त है।

शेष हैं कुछ काम अब भी

❒सहदेव समर्पित

शेष हैं कुछ काम अब भी।
चल जला पुरुषार्थ का दीपक, अरे बन राम अब भी।
शेष हैं कुछ काम अब भी।।

तारकों का पथ प्रदर्शन छोड तू खुद चॉंद-सा बन।
राह है तेरे पगों में, सामने है लक्ष्य पावन।
ठोकरों पर मत गिला कर, मुड़ न वापस तिलमिला कर,
कण्टकों को कर तिरस्कृत पग बढ़ा अविराम अब भी!!
शेष हैं कुछ काम अब भी!

कण्टकों में फूल-सा खिल, औ' तिमिर में दीप-सा जल।
शिव बना खुद को पथिक तू, संकटों का पी हलाहल।।
ऑंधियों में जिन्दगी है, रे अगर तू आदमी है।
तो समझ ले जिन्दगी में हेय है विश्राम अब भी!!
शेष हैं कुछ काम अब भी!!

रात की काली सतह पर, लिख अरे कुछ लेख अब भी।
शेष है सुबह का तेरे, रक्त से अभिषेक अब भी।
सुबह की आशा यही है, राह की भाषा यही है,
हो 'समर्पित' चल-चला-चल, राह पर निष्काम अब भी।
शेष हैं कुछ काम अब भी!!

सामयिक चिन्तन

मुजफ़्फनगर दंगा : सरकार की उदासीनता का दुष्परिणाम

❑**विनोद बंसल,** 329, द्वितीय तल, संत नगर, ईस्ट ऑफ कैलाश, नई दिल्ली। मो0 9810949109

गनीमत यह है कि न्यायपालिका अभी भी भरोसेमंद और अन्याय के खिलाफ उम्मीद की किरण के रूप में है। किन्तु वहीं दूसरी ओर यह बात उतनी ही खराब भी है कि न्यायपालिका और विशेष रूप से शीर्ष अदालत को अब बहुत सारे छोट-छोटे ऐसे मामलों में भी हस्तक्षेप करना पड़ता है जिन्हें आसानी से कार्यपालिका द्वारा सुलझा लेना चाहिए।

उच्चतम न्यायालय न सिर्फ दंगों की जांच करेगा बल्कि राहत एवं पुनर्वास कार्यों की निगरानी भी करेगा। मुजफ़्फरनगर में सांप्रदायिक तनाव की हिंसक झड़पों के बाद उसके भीषण दंगे में पाविर्तित हो जाने के पीछे शासन और प्रशासन की सुस्ती या षड्यंत्रों के संकेत साफ दिख रहे हैं। यह सर्वविदित है कि क्षेत्र में छेड़छाड़ की घटना और फिर उसे लेकर दो हिन्दू युवकों की हत्या के मामले में पुलिस को सही ढंग से काम नहीं करने दिया गया। टेलीविजन चेनलों तथा अन्य प्रसार माध्यमों से पूरी दुनिया ने देखा कि किस प्रकार देश का सबसे बड़ा प्रदेश पिछले डेढ़ वर्ष में सबसे ज्यादा दंगों को झेलने वाला प्रदेश बना, किन्तु वहां की सरकार में बैठे लोग अभी भी अपनी मुस्लिम तुष्टीकरण की नीति और वोट बैंक के लालच से बाहर आने का नाम भी नहीं ले रहे हैं।

मुजफ़्फरनगर दंगों की पृष्ठ-भूमि में जाने से पता चलता है कि इतनी बड़ी घटना के पीछे हिन्दू छात्रा के साथ एक मुस्लिम युवक द्वारा की गई छेड़-छाड़ की घटना मूल कारण है। यह छात्रा विद्यालय से घर लौट रही थी और छात्रा के भाई द्वारा उसका विरोध करने पर भी जब वह युवक नहीं माना तो उनमें आपस में कहा सुनी हो गई और मामला एक दूसरे के खून लेने पर उतर आया। छात्रा के दो घनिष्ठ संबंधियों को वीभत्स तरीके से सरेआम मौत के घाट उतारने के बावजूद जघन्य हत्यारों पर शिकंजा कसने के बजाय पुलिस-प्रशासन द्वारा उन्हीं के परिजनों के विरुद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज किए जाने से पूरे प्रकरण का सांप्रदायीकरण होना स्वाभाविक ही था। हद तो तब हो गई जब पुलिस ने मामला हाथ से निकलते देख हिम्मत कर कुछ दंगाईयों को गिरफ़्तार तो किया किन्तु ऊपर से निर्देश आते ही उन्हें छोड़ना पड़ा। अब प्रारम्भ हुआ सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का खेल। प्रशासनिक विफलता तथा मुस्लिम समुदाय के प्रति सरकार का अनुचित, असंवैधानिक व विघटनकारी चेहरा देख हिन्दू समुदाय ने अपनी बहू-बेटियों की रक्षार्थ पंचायत करने की ठानी। उसकी अनुमति तो सरकार ने नहीं दी किन्तु उसके एक दिन पहले शुक्रवार को मुस्लिम समुदाय ने हजारों की संख्या में एकत्र होकर सरकार व हिन्दू समुदाय पर अपना प्रभुत्व जमाने की कोशिश जरूर कर डाली। अपने ऊपर बार-बार प्रहार और सरकारी उदासीनता से आहत हिन्दू-समाज को भी बहू-बेटियां बचाओ पंचायत करनी पड़ी। पूरी तरह शान्तिपूर्ण रूप से आयोजित इस पंचायत के बाद जब लोग अपने-अपने घरों को लौट रहे थे तब पूर्व नियोजित ढंग से उन लोगों पर जान लेवा हमले किए गए। भारी संख्या में पुलिस, अर्ध सैनिक बलों व प्रशासनिक अधिकारियों की उपस्थित में दंगाईयों ने अपने करतब दिखाए और असंख्य हिन्दू मौत के घाट उतार दिए गए।

हिन्दू बहिन-बेटियों के साथ छेड़-छाड़ या उत्पीड़न की यह कोई अकेली, अचानक घटी या पहली घटना नहीं थी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार इस प्रकार की घटनाएं क्षेत्र में आम हो चली हैं। एक अध्ययन से पता चला है कि बड़ी मात्रा में मुस्लिम युवक हिन्दू युवतियों को स्कूल-कालेजों से छल पूर्वक प्यार का झांसा, जोर जबर्दस्ती या उन्हें मजबूर कर ले जाते हैं। कुछ भ्रमित कर शादी भी करते हैं और उन्हें या तो ऐसी हालात में छोड़ देते हैं कि वह न तो उसके साथ रह सके और न ही अपने परिवार के साथ लौट सके। ऐसा भी देखा गया है कि यदि लड़की की कोई बहिन या सहेली

हो तो समझो अगली बारी उसकी भी है। ऐसी स्थिति में हिन्दू समाज आखिर कब तक अपने दर्द को सीने से लगा अपनी बहिन बेटियों की इज्जत लुटते देखता रहेगा। गत वर्ष दिए गए केरल उच्च न्यायालय के लव जिहाद संबन्धी निर्णय ने इसका एक भयवह चित्रण पेश किया है जो समस्त सरकारी तंत्र, कानून बनाने व उसका पालन करने वालों के लिए एक चुनौती है।

घटना बड़ी थी और इसे समय रहते रोका जा सकता था, यह सभी जानते भी हैं और उसे मानते भी हैं। जिस तरह करीब-करीब सभी राजनीतिक दलों के नेताओं के साथ-साथ राज्य सरकार पर भी गंभीर आरोप लग रहे हैं, उन्हें देखते हुए इसकी संभावना कम है कि इस मामले की सही तरह से जांच हो सकेगी। लेकिन यह समय की मांग है कि जांच जिस भी स्तर पर हो उसकी निगरानी अवश्य की जाए। मौजूदा स्थिति में न्यायपालिका के अतिरिक्त अन्य कोई ऐसी संस्था नजर नहीं आ रही है जिस पर यह भरोसा किया जा सके कि वह निगरानी का काम सही तरह से कर सकेगी।

गनीमत यह है कि न्यायपालिका अभी भी भरोसेमंद और अन्याय के खिलाफ उम्मीद की किरण के रूप में है। किन्तु वहीं दूसरी ओर यह बात उतनी ही खराब भी है कि न्यायपालिका और विशेष रूप से शीर्ष अदालत को अब बहुत सारे छोट-छोटे ऐसे मामलों में भी हस्तक्षेप करना पड़ता है जिन्हें आसानी से कार्यपालिका द्वारा सुलझा लेना चाहिए। यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि बड़े घपले-घोटालों के साथ-साथ हिंसा के गंभीर मामलों की निष्पक्ष जांच के लिए भी उसे दखल देने के लिए आगे आना पड़ता है। हाल ही में उसे किश्तवाड़ की हिंसा पर दखल देना पड़ा। इसके पहले कुछ राज्यों में पुलिसिया जुल्म की

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

बात तो छोटी सी नहीं थी

धर्मभीरू सैक्युलरों और मीडिया ने दंगों के पीछे की घटना को छोटी सी घटना कहा। एक अखबार ने उस नौंवी कक्षा की छात्रा से बात की और उसका दर्द जाना। मुजफ्फरनगर से १७ किमी दूर मलिकपुरा के गांव में प्रायमरी स्कूल है। यह लड़की नंगला मंदौड़ के भारती इंटर कालेज में पढ़ती थी। इस गांव के लोग इस बैच से पहले लड़कियों को पढ़ाते नहीं थे। क्योंकि नंगला मंदौड़ के बीच में मुस्लिम बहुल कवाल गांव पड़ता है। कवाल गांव के कारण मलिकपुरा के लोग लड़कियों के बारे में हमेशा आशंकित रहते थे। अब भी उन्होंने हिम्मत की थी कि लड़कियाँ के साथ गांव का कोई बड़ा आदमी जाएगा।

गांव के एक छोटे से मन्दिर के पुजारी को यह हिदायत थी कि कोई बच्चा अकेला दुकेला यहाँ आ जाए तो उसे यहीं रोक ले और तब तक न जाने दे जब तक कि गांव का कोई बड़ा आदमी न आ जाए। यह लड़की भी अपने भाईयों के साथ जाती थी। इन लडकियों ने कभी यह सफर अकेले तय नहीं किया। कवाल के हर मोड़ पर लड़के खड़े रहते थे जो मलिकपुरा गांव की लड़कियों पर टिप्पणियाँ करते रहते थे। २७ अगस्त को स्कूल से लौटते समय एक लड़के ने इसे अपशब्द कहे। भाईयों ने आपत्ति की। झगड़ा बढ़ गया और उन दोनों भाईयों की निर्दयतापूर्वक जान ले ली गई।

प्रश्न यह है कि इस 'छोटी सी घटना' का क्या गांव के जिम्मेवार लोगों को पता नहीं था? कवाल और मलिकपुरा की लड़कियों में क्या अन्तर था? या प्रशासन इस हालत से अनजान था? क्या 'बड़ी घटना' तभी बनेगी जब कोई दिल्ली जैसा काण्ड हो जाए?

वही लोग जो कल तक उन 'लड़कों' को रोक नहीं पाए, बाद में उन्हीं के पक्ष में हथियार लेकर आ गए। तो क्या वे गांव के लोग ही उन लड़कों को शह दे रहे थे? लड़कियों ने अधिकारों को लेकर राजनीति करने वाले संगठनों ने भी यहाँ की लड़कियों को शिकार ही समझा? प्रशासन, महिला हैल्प लाईन सब पंगु थे? गांव के लोग अलग से रास्ता मांग रहे थे। क्या इससे उनकी पीड़ा को समझा नहीं जा सकता? उसके बाद जो राजनीति हुई, उससे प्रायः सभी लोग परिचित हैं। हमारा प्रश्न तो यह है कि क्या लड़कियों का अपमान चुपचाप सहन करते रहने से ही इस देश के तथाकथित 'साम्प्रदायिक सद्भाव' की रक्षा होगी? यहाँ तो रामायण और महाभारत जैसे बड़े युद्ध और चित्तौड़ के साके लड़कियों के सम्मान की रक्षा करने के लिए हुए हैं। यह छोटी सी घटना किसी और के लिए होगी। क्या कोई मानवाधिकारवादी उस लड़की की ओर भी देखेगा जिसने अपने दो भाई गंवा दिए और अब वह पढ़ाई भी नहीं कर पाएगी।

–सहदेव समर्पित

स्मरण/श्रद्धांजली

डॉ० रामनाथ वेदालंकार : व्यक्तित्व एवं साहित्य

❐डॉ॰ भवानी लाल भारतीय ३/५, शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर, राजस्थान

गुरुकुल कांगड़ी के पुराने स्नातकों की पीढ़ी डॉ॰ रामनाथ जी के निधन के साथ समाप्त हो गई। मैं उनके लेखन से पहले परिचित हुआ, उनका वैयक्तिक सम्पर्क वर्षों बाद मिला। यों मैं गुरुकुल कांगड़ी के अनेक नये, पुराने तथा समवयस्क स्नातकों से मिला हूँ। उनके सम्पर्क में आया हूँ। अथर्ववेद के भाष्यकार पं॰ विश्वनाथ विद्यालंकार मुझसे भेंट करने स्वयं मेरे चण्डीगढ़ निवास में आये थे।

डॉ॰ सत्यकेतु विद्यालंकार ने जब सात खण्डों में आर्यसमाज के बृहत् इतिहास लेखन की योजना बनाई तो मैं उनका सहलेखक रहा। डॉ॰ सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार जैसे बहुआयामी साहित्यकार से मिलने के अवसर भी आये। किन्तु डॉ॰ रामनाथ जी से मेरी प्रथम भेंट उस समय हुई जब मैं १९८० में दयानन्द वैदिक शोधपीठ पंजाब विश्वविद्यालय का प्रोफेसर एवं अध्यक्ष बना, जिस पद पर डॉ॰ रामनाथ जी मेरे से पहले तीन वर्ष तक कार्य कर चुके थे और सेवानिवृत्त होकर वेद मंदिर ज्वालापुर में स्थायी रूप से निवास करने लगे थे।

७ जुलाई १९१४ को बरेली जिले के फरीदपुर ग्राम में एक सद्‌गृहस्थ श्री गोपाल राम के यहाँ जन्मे रामनाथ ने गुरुकुल कांगड़ी में अध्ययन पूरा कर १९३६ में वेदालंकार की उपाधि प्राप्त की। वे प्रारम्भ से ही इस गुरुकुल की सेवा में रहे। जोधपुर के पुस्तकालय में मेरे हाथ में डॉ॰ रामनाथ जी की दो वेद विषयक कृतियाँ हाथ लगीं-वैदिक वीर गर्जना (१९४६ का प्रकाशन) तथा वैदिक सूक्तियाँ (१९४७) दोनों अपनी-अपनी दृष्टि से अपूर्व थीं। जो लोग यह समझते हैं कि वेद संहिताओं में मात्र अग्नि, इन्द्र, वरुण आदि आर्यों के देवताओं की स्तुतियाँ हैं, उनकी यह भ्रान्त धारणा वैदिक वीर गर्जना को पढ़कर दूर हो गई। इस लघु ग्रंथ में जिन वेद मंत्रों की व्याख्या की गई है वे पाठकों में वीर भावना का संचार करने वाले हैं। दुष्ट-दलन तथा आर्य मर्यादाओं के विनाशक असुर लोगों के प्रति कैसा व्यवहार होना चाहिए, यह इन मंत्रों से सिद्ध होता है। वैदिक सूक्ति संग्रह का लेखन अपने आप में सरल होते हुए भी कठिन कार्य है। कारण कि चारों वेद संहिताओं में से यदि स्फूर्तिदायक, प्रेरणाप्रद, जीवनोत्थान में सहायक सूक्ति वाक्यों का संग्रह करें तो एक बड़ा पोथा तैयार हो सकता है। यहाँ भी सूक्ति चयनकर्ता की सूझबूझ प्रत्यक्ष दिखाई देती है।

मैंने डॉ॰ रामनाथजी की लेखनी का परिचय तो पाया किन्तु उनसे प्रत्यक्ष मिलने का अवसर तब आया जब मैं गुरुकुल कांगड़ी के एक शोध छात्र योगेन्द्र पुरुषार्थी-बाद में बने स्वामी दिव्यानन्द योगाचार्य के शोध प्रबंध का परीक्षार्थी होने के कारण उनकी मौखिकी (वायवा) लेने हरिद्वार गया। सौभाग्य से यह अवसर गुरुकुल के वार्षिकोत्सव का भी था। यदि भूलता नहीं हूँ तो लोकसभा के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ॰ बलराम जाखड़ ने इस अवसर पर दीक्षान्त भाषण दिया था। डॉ॰ रामनाथजी ने इस समय वेद मंदिर की पहली मंजिल के क्वार्टर में अपना स्थायी निवास बना लिया था। वे खुद अपनी चाय, प्रातराश आदि तैयार कर लेते थे और अवशिष्ट समय अध्ययन एवं लेखन में लगाते थे। उसके बाद तो जब-जब अकादमिक कार्यों से गुरुकुल कांगड़ी जाना होता, मैं डॉ॰ रामनाथजी का ही अतिथि बनता। विश्वविद्यालय के अतिथिगृह की अपेक्षा मुझे यहाँ सुविधा मिलती। मुझसे बड़े तथा ज्ञानवृद्ध डॉ॰ साहब स्वयं मेरे लिए खानपान, निवासादि की सभी सुविधाएं जुटाते। जब गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय ने अखिल भारतीय प्राच्यविद्या परिषद का अधिवेशन आयोजित किया तो आगन्तुक प्रतिनिधियों के निवास की व्यवस्था सुदूर आश्रमों तथा होटलों में की गई थीं। मैंने यही उचित समझा कि वेद मंदिर में डॉ॰ साहब का अतिथि बनना ही मेरे लिए सुविधाजनक रहेगा और मैंने ऐसा ही किया।

डॉ॰ साहब की गुणग्राहकता का क्या कहना? जब उन्हें ज्ञात होता कि आर्य वानप्रस्थाश्रम ज्वालापुर में मेरा प्रवचन होना है, वे स्वयं एक सामान्य श्रोता बनकर वहाँ उपस्थित होते। यह ईश्वर की महती कृपा रही कि जीवेम शरदः शतम् की वैदिक उक्ति को उन्होंने लगभग सार्थक किया और निन्यानवे वर्ष की दीर्घायु प्राप्त की। उनकी यशः काया आज भी उनके लेखन के रूप में हमारे समक्ष विद्यमान है।

डॉ॰ रामनाथ प्रणीत साहित्य

डॉ॰ रामनाथजी का लेखन मुख्यतः वेदों और वेदार्थ

पर केन्द्रित है। अपने शोध के लिए उन्होंने जो विषय चुना वह अपने आप में नया था। वेदों के गंभीर पाठकों को पता है कि वेद संहिताओं में जो मंत्र संग्रहीत हैं वे विभिन्न शैलियों में प्रसूत हैं। वस्तुतः वेद एक काव्य है जैसा कि अथर्ववेद कहता है–

पश्य देवस्य काव्यं न ममार न जीर्यति।

देव (परमात्मा) के इस दिव्य काव्य को देखो, यह लौकिक काव्यों की भांति न तो पुराना पड़ता है और न इनका अन्य सामान्य काव्यों की भांति विलोप होता है। वेदों में कथन की अनेक शैलियां दिखाई देती हैं। कहीं पर स्वागत कथन या एकालाप की शैली प्रयुक्त हुई है–अहमिन्द्रो न पराजिग्ये–मैं इन्द्र हूँ, कभी पराजित नहीं होता। अनेकत्र संवाद शैली का प्रयोग मिलता है। वेदों का इतिहास परक अर्थ करने वाले भाष्यकारों ने वेदों में विश्वामित्र, नदी संवाद, देवशुनि सरमा का वार्तालाप, उर्वशी पुरूरवा संवाद आदि का विवेचन किया है, यद्यपि निरुक्तकार यास्क तथा उनके अनुवर्ती भाष्यकार ऋषि दयानन्द इनका यौगिक शैली से सामान्य अर्थ करते हैं। वेदों में प्रश्नोत्तर शैली का प्रयोग भी मिलता है। 'पृच्छामि त्वां' आदि मंत्र (यजुर्वेद) प्रश्नोत्तर शैली में शाश्वत तथ्यों को उजागर करते हैं।

इस प्रकार वेदों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियों में उक्त मंत्रों की सटीक विवेचना कर शोधकर्ता ने वैदिक अध्ययन को एक नया आयाम दिया है। १९८० में डॉ० रामनाथजी की वेदार्थ विषयक एक मौलिक कृति प्रकाशित हुई। इसे पंजाब विश्वविद्यालय के अन्तर्गत होशियारपुर में कार्यरत शोध एवं संस्कृत विभाग ने प्रकाशित किया था। ऋषि दयानन्द का वेदार्थ के प्रति जो दृष्टिकोण था, उसके संबंध में यों तो पचासों ग्रंथ मेरे देखने में आये हैं, किन्तु इनमें बहुत कम ऐसे हैं जिनसे उनके लक्ष्य की सफल पूर्ति हो सकी है। कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की दयानन्द पीठ के प्रथम अध्यक्ष रहे डॉ० श्रीनिवास शास्त्री के एतद् विषयक दो ग्रंथ हैं। इनके समकक्ष मैं डॉ० रामनाथ जी के ग्रंथ 'वेदभाष्यकारों की वेदार्थ प्रक्रियाएं' को मानता हूँ।

वेदार्थ करने की प्रणालियों की विवेचना यास्क ने निरुक्त में की है। उसके अनुसार अत्यन्त पुरातन काल से वेदों के भिन्न–भिन्न अर्थ किये जाते रहे हैं। कालान्तर में जब यज्ञों की प्रधानता रही तो मंत्रों के यज्ञपरक–विनियोग विधायक अर्थ किये गये। सायणादि भाष्यकार इसी श्रेणी के हैं जिन्होंने प्रत्येक मंत्र का कोई न कोई विनियोग यज्ञ कर्म में माना है। वेदार्थ का एक ऐतिहासिक अर्थ करने का पक्ष भी था जो वेदों में कथा–कहानियां तथा आख्यानों को देखता था। किन्तु निरुक्तकार ने जिस वेदार्थ प्रणाली का प्रतिपादन किया वह यौगिक अर्थ करने को मान्यता देती है। ऋषि दयानन्द ने इसी प्रणाली को स्वीकार किया था और वेदार्थ में एक नई क्रान्ति उपस्थित की थी। यह प्रणाली न तो उन पाश्चात्य वेदज्ञों को स्वीकार हुई जो वेदों में प्राचीन आर्यों की जीवन प्रणाली, उनकी समाज व्यवस्था आदि का विवेचन मानते हैं और न याज्ञिक भाष्यकारों को स्वीकार्य हुई जिनकी दृष्टि में वेदों की रचना या प्राकट्य ही यज्ञों की व्याख्या के लिए हुआ है।

डॉ० रामनाथ ने अपने इस ग्रंथ में दयानन्द प्रतिपादित वेदार्थ प्रणाली के दो प्रकार (भेद) माने हैं। लौकिक अर्थ और पारमार्थिक अर्थ। यही कारण है कि दयानन्द के यजुर्वेद भाष्य में प्रत्येक मंत्र की लोकहितपरक व्याख्या की गई है। वह उस याज्ञिक अर्थ प्रणाली को अस्वीकार करती है जिसके अनुसार इस वेद में शाखाछेदन, अग्निहोत्र, राजसूय तथा अश्वमेध आदि कर्मकाण्ड मात्र विवेचित हुए हैं। निश्चय ही दयानन्द का यह वेदार्थ उन लोगों को अटपटा अवश्य लगेगा जो इन ग्रंथों में मात्र यज्ञ विधियों को देखने के ही अभ्यस्त थे। लौकिक के अतिरिक्त जो पारमार्थिक अर्थ देने वाले मंत्र हैं वे विभिन्न दार्शनिक तथा आध्यात्मिक सत्यों को प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार दयानन्द की वेदार्थ प्रणाली की पुष्टि में लिखा गया यह ग्रंथ अपने आप में एक स्मृति स्तम्भ बन गया है।

स्वामी दीक्षानन्द जी की प्रेरणा से डॉ० साहब ने सामवेद का भाष्य किया जो ऋषि दयानन्द निर्मित मानदण्ड पर खरा उतरता है। उनके अन्य ग्रंथों में यज्ञ मीमांसा (१९८१), अग्निहोत्र दर्पण (१९८१) वैदिक नारी मीमांसा आदि अपना महत्त्व रखते हैं। दयानन्द शोधपीठ, चण्डीगढ़ पर कार्य करते हुए उन्होनें जो परियोजनाएं (प्राजेक्ट) शुरु कीं, उनमें भी कार्य हुआ। प्रथम कार्य था– ऋषि दयानन्द के ग्रंथों में कला कौशल, शिक्षा तथा राजनीति सम्बन्धों मंत्रों का संग्रह तथा विवेचन तथा दूसरा था वैदिक शब्दार्थ विचार। उनका प्रकाशन उस समय हुआ जब वे वहां से अवकाश ले चुके थे। यद्यपि ये परियोजनाएं सुदीर्घ तथा बृहत् हैं तथापि इस आरम्भिक कार्य को देखने से विदित होता है कि इसे आगे बढ़ाना आवश्यक है। डॉ० रामनाथ अपने वैदुष्य तथा लेखन क्षमता के कारण भावी पीढ़ियों के लिए आदर्श बने रहेंगे। उनकी स्मृति में नमन।

पुनश्च– यजुर्वेद ज्योति तथा इसी शैली में लिखी गई अन्य पुस्तकों का महत्त्व इसलिए है कि इनमें वेद मंत्रों के अर्थ तथा उनके अन्दर आए विचारों की व्यापकता तथा सार्वजनीनता को ध्यान में रखकर किए गए हैं। इसलिए परम्परागत कर्मकाण्डीय अर्थों को यहाँ महत्त्व नहीं मिला है।

इतिहास

छत्रपति शिवाजी महाराज और उनकी मुस्लिम नीति

❒डॉ॰ विवेक आर्य, शिशु रोग विशेषज्ञ **drvivekarya@yahoo.com**

शिवाजी की मुस्लिम नीति न्यायप्रियता और मत निरपेक्षता की जीती जागती मिसाल है।

कुछ पक्षपाती इतिहासकारों ने यह कहते हुए शिवाजी की भरसक आलोचना की है कि शिवाजी केवल और केवल हिन्दू हितों के समर्थक थे। पर पक्षपात रहित छानबीन की जाये तो इतिहास सभी प्रश्नों का उत्तर देने में सक्षम है।

वीर शिवाजी द्वारा उनके राज्य में हिन्दू जनता की रक्षा करना, मन्दिरों का पुनरुद्धार करवाना, गौ हत्या पर बंदी बना कर दंड आदि देना, नेताजी पालकर जैसे पहले हिन्दू, बाद में जबरदस्ती मुस्लिम बनाये गए वीरों की फिर से शुद्धि कर हिन्दू बनाना तो सार्वजानिक तथ्य हैं।

औरंगजेब ने अपने ही पूर्वज अकबर द्वारा अपनाई गई हिन्दू-नीति, जिसमें विशेष रूप से राजपूत राजाओं के साथ मित्रता, वैवाहिक सज़्बन्ध एवं आपस में हिन्दू राजाओं को लड़ाना शामिल था, का त्याग कर सब प्रकार से हिन्दू प्रजा का दमन करना आरंभ कर दिया।

मिस्टर पारसनिस द्वारा लिखित मुहज़्मद आदिल शाह द्वारा जारी किये गए हुकमनामे से हमें उस काल की परिस्थितियों के विषय में भली-भांति मालूम चलता है- 'सभी उच्च दर्जे के पद केवल मुसलमानों के लिए आरक्षित हों, इनमें से कोई भी किसी हिन्दू को नहीं मिलना चाहिए, कुछ छोटे पदों पर हिंदुओं को जरुर नौकरियाँ दी जा सकती हैं। सबसे अमीर हिन्दू का दर्जा भी एक गरीब मुसलमान से ऊपर नहीं होना चाहिए। एक हिन्दू और एक मुस्लिम के विवाद में भी काज़ी को किसी भी हालत में मुस्लिम को दण्डित नहीं करना चाहिये चाहे, मुस्लिम ने हिन्दू पर जुल्म किया हो। सभी हिन्दुओं के लिए जजिया देना अनिवार्य हो। जो मुस्लिम क्लर्क जजिया ले रहा हो वह अपने स्थान पर सदा बैठा रहे चाहे अमीर से अमीर हिन्दू भी उसके सामने क्यूँ न खड़ा हो।'

(सन्दर्भ-Parasnis I,S.,VOL.II,p.26)

'दो निर्देशों में क़ाज़ी को स्पष्ट रूप से कहा गया था कि उसे मराठा राज्य में हिन्दू मंदिरों की मूर्तियों को तोड़ना है।'

(सन्दर्भ- Wad and Parasnis-Sanada patren, pp.77,81)

पाठक आसानी से मुगल राज्य में हिन्दुओं पर हो रहे अत्याचारों को समझ सकते हैं। वीर शिवाजी ने हिन्दुओं की ऐसी दशा को देखकर व्यथित मन से औरंगजेब को उसके अत्याचारों से अवगत करने के लिए एक पत्र लिखा था। जिसे सर जदुनाथ सरकार अपने शब्दों में तार्किक, शांत प्रबोधन एवं राजनीतिक सूझ-बूझ से बुना गया बताते हैं।

वीर शिवाजी लिखते हैं कि सभी जगत् के प्राणी ईश्वर की संतान हैं। कोई भी राज्य तब उन्नति करता हैं जब उसके सभी सदस्य सुख-शांति एवं सुरक्षा की भावना से वहाँ पर निवास करते हैं। इस्लाम अथवा हिन्दू एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। कोई मस्जिद में पूजा करता है, कोई मंदिर में पूजा करता है, पर सभी उस एक ईश्वर की पूजा करते हैं। यहाँ तक कि कुरान में भी उसी एक खुदा या ईश्वर के विषय में कहा गया है जो केवल मुसलमानों का खुदा नहीं है बल्कि सभी का खुदा है। मुग़ल राज्य में जजिया एक नाजायज़, अविवेकपूर्ण, अनुपयुक्त अत्याचार है जो तभी उचित होता जब राज्य की प्रजा सुरक्षित एवं सुखी होती। पर सत्य यह है कि हिन्दुओं पर जबरदस्ती जजिया के नाम पर भारी कर लगाकर उन्हें गरीब से गरीब बनाया जा रहा हैं। धरती के सबसे अमीर सम्राट के लिए गरीब भिखारियों, साधुओं, ब्राह्मणों, अकाल पीड़ितों पर कर लगाना अशोभनीय है। मच्छर और मक्खियों को मारना कोई बहादुरी का काम नहीं है। अगर औरंगजेब में कोई वीरता है तो उदयपुर के राणा और इस पत्र के लेखक से जजिया वसूल कर दिखाए।'

औरंगजेब अपने कई दुर्ग और क्षेत्र शिवाजी के हमलों में गंवा चुका था और उसे यह सीधी चुनौती वीर शिवाजी द्वारा दी गई थी कि अगर उसने हिन्दू जनता पर जजिया के रूप में अत्याचार करना बंद नहीं किया तो उसका परिणाम ठीक नहीं होगा।

अपने अहंकार और धर्मान्धता में चूर औरंगजेब ने शिवाजी के पत्र का कोई उत्तर न दिया पर शिवाजी ने एक ऐसी जन चेतना और अग्नि प्रज्लवित कर दी थी जिसको बुझाना आसान नहीं था।

वीर शिवाजी हिन्दू धर्म के लिए उतने ही समर्पित थे जितना औरंगजेब इस्लाम के लिए समर्पित था, परन्तु दोनों में एक भारी भेद था। शिवाजी अपने राज्य में किसी भी धर्म अथवा मत को मानने वालों से किसी भी तरह का पक्षपात

नहीं करते थे एवं उन्हें अपने धर्म को मानने में किसी भी प्रकार की कोई मनाही नहीं थी।

इस्लाम के विषय में शिवाजी की नीति :

1 अफजल खान को मारने के बाद उसके पूना, इन्दापुर, सुपा, बारामती आदि इलाकों पर शिवाजी का राज स्थापित हो गया। एक ओर तो अफजल खान ने धर्मान्धता में तुलजापुर और पंडरपुर के मंदिरों का संहार किया था दूसरी ओर शिवाजी ने अपने अधिकारियों को मंदिरों के साथ-साथ मस्जिदों को भी पहले की ही तरह दान देने की आज्ञा जारी की थी।

2 बहुत कम लोगों को यह ज्ञात है कि औरंगजेब ने स्वयं शिवाजी को चार बार अपने पत्रों में इस्लाम का संरक्षक बताया था। ये पत्र 14 जुलाई 1659, 26 अगस्त एवं 28 अगस्त 1666 एवं 5 मार्च 1668 को लिखे गए थे। (Raj VIII, 14,15,16 Documents)

3 डॉ फ्रायर ने कल्याण जाकर शिवाजी की धर्मनिरपेक्ष नीति की अपने लेखों में प्रशंसा की हैं। (Fryer,Vol I, p. 41n)

4 ग्रांट डफ लिखते हैं कि शिवाजी ने अपने जीवन में कभी भी मुस्लिम सुल्तान द्वारा दरगाहों, मस्जिदों, पीर मज़ारों आदि को दिए जाने वाले दान को नहीं लूटा। (सन्दर्भ: history of the Mahrattas, p 104)

5 डॉ० ढिल्लों लिखते हैं कि वीर शिवाजी को उस काल के सभी राजनीतिज्ञों में सबसे उदार समझा जाता था। (सन्दर्भ: Eng.Records II,348)

6 शिवाजी के सबसे बड़े आलोचकों में से एक- खाफी खाँ, जिसने शिवाजी की मृत्यु पर यह लिखा था कि अच्छा हुआ एक काफिर का भार धरती से कम हुआ, शिवाजी की तारीफ़ करते हुए अपनी पुस्तक के दूसरे भाग के पृष्ठ 110 पर लिखता है कि शिवाजी का आम नियम था कि कोई मनुष्य मस्जिद को हानि न पहुँचायेगा, लड़की को न छेड़े, मुसलमानों के धर्म की हँसी न करे तथा उसको जब कभी कहीं कुरान हाथ आता तो वह उसको किसी न किसी मुस्लमान को दे देता था। औरतों का अत्यंत आदर करता था और उनको उनके रिश्तेदारों के पास पहुँचा देता था। अगर कोई लड़की हाथ आती तो उसके बाप के पास पहुँचा देता। लूट-खसोट में गरीबों और काश्तकारों की रक्षा करता था। ब्राह्मणों और गौ के लिए तो वह एक देवता था। यद्यपि बहुत से मनुष्य उसको लालची बताते हैं परन्तु उसके जीवन के कामों को देखने से विदित हो जाता है कि वह जुल्म और अन्याय से धन इकठ्ठा करना अत्यंत नीच समझता था।

(सन्दर्भ : लाला लाजपत राय कृत छत्रपति शिवाजी पृष्ठ 132, संस्करण चतुर्थ, संवत 1983)

7- शिवाजी जंजिरा पर विजय प्राप्त करने के लिए केलशी के मुस्लिम बाबा याकूत से आशीर्वाद तक मांगने गए थे। (सन्दर्भ : Vakaskar,91 Q , bakshi p.130)

8 शिवाजी ने अपनी सेना में अनेक मुस्लिमों को रोजगार दिया था। 1650 के पश्चात् बीजापुर, गोलकोंडा, मुगलों की रियासत से भागे अनेक मुस्लिम, पठान व फारसी सैनिकों को विभिन्न ओहदों पर शिवाजी द्वारा रखा गया था जिनकी धर्म सम्बन्धी आस्थाओं में किसी भी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जाता था और कई तो अपनी मृत्यु तक शिवाजी की सेना में ही कार्यरत रहे। कभी शिवाजी के विरोधी रहे सिद्दी संबल ने शिवाजी की अधीनता स्वीकार की थी और उसके पुत्र सिद्दी मिसरी ने शिवाजी के पुत्र शम्भा जी की सेना में काम किया था। शिवाजी की दो टुकड़ियों के सरदारों का नाम इब्राहीम खान और दौलत खान था जो मुग़लों के साथ शिवाजी के युद्ध में भाग लेते थे। काजी हैदर के नाम से शिवाजी के पास एक मुस्लिम था जो कि ऊँचे ओहदे पर था। फोंडा के किले पर अधिकार करने के बाद शिवाजी ने उसकी रक्षा की जिम्मेदारी एक मुस्लिम फौजदार को दी थी। बखर्स के अनुसार जब आगरा में शिवाजी को कैद कर लिया गया था तब उनकी सेवा में एक मुस्लिम लड़का भी था जिसे शिवाजी के बच निकलने का पूरा वृत्तांत मालूम था। शिवाजी के बच निकलने के पश्चात् उसे अत्यंत मार खाने के बाद भी स्वामीभक्ति का परिचय देते हुए अपना मुँह कभी नहीं खोला था। शिवाजी के सेना में कार्यरत हर मुस्लिम सिपाही चाहे किसी भी पद पर हो, शिवाजी की न्याय प्रिय एवं सेक्युलर नीति के कारण उनके जीवन भर सहयोगी बने रहे। (सन्दर्भ : shivaji the great -Dr bal kishan vol 1 page 177)

शिवाजी सर्वदा इस्लामिक विद्वानों और पीरों की इज्ज़त करते थे। उन्हें धन, उपहार आदि देकर सम्मानित करते थे। उनके राज्य में हिन्दू-मुस्लिम के मध्य किसी भी प्रकार का कोई भेद नहीं था। जहाँ हिंदुओं को मंदिरों में पूजा करने में कोई रोक टोक नहीं थी वहीं मुसलमानों को मस्जिद में नमाज़ अदा करने से कोई भी नहीं रोकता था।

किसी दरगाह, मस्जिद आदि को अगर मरम्मत की आवश्यकता होती तो उसके लिए राज कोष से धन आदि का सहयोग भी शिवाजी द्वारा दिया जाता था। इसीलिए शिवाजी के काल में न केवल हिन्दू अपितु अनेक मुस्लिम राज्यों से मुस्लिम भी शिवाजी के राज्य में आकर बसे थे। शिवाजी की मुस्लिम नीति न्यायप्रियता और मत निरपेक्षता की जीती जागती मिसाल है।

ऐसे थे हमारे लाल बह

❒अमनदीप सिंह आर्य

ये वही शास्त्री जी हैं जिन्होंने अपने प्रधानमंत्री रहते समय लाहौर पर ऐसा कब्जा जमाया था कि पूरे विश्व ने जोर लगा लिया लेकिन लाहौर देने से इनकार कर दिया था। आखिरकार उनकी एक बड़ी साजिस के तहत हत्या कर दी गयी, जिसका आज तक पता नहीं लगाया जा सका है।

1 जब श्रीमती इंदिरा गांधी शास्त्रीजी के घर (प्रधानमंत्री आवास) पर पहुँची तो कहा कि यह तो चपरासी का घर लग रहा है, इतनी सादगी थी हमारेशास्त्री जी में...

2 जब 1965 में पाकिस्तान से युद्ध हुआ था तो शास्त्री जी ने भारतीय सेना का मनोबल इतना बढ़ा दिया था कि भारतीय सेना पाकिस्तानी सेना को गाजरमूली की तरह काटती चली गयी और पाकिस्तान का बहुत बड़ा हिस्सा जीत लिया था।

3 जब भारत पाकिस्तान का युद्ध चल रहा था तो अमेरिका ने भारत पर दबाव बनाने के लिए कहा था कि भारत युद्ध खत्म कर दे, नहीं तो अमेरिका भारत को खाने के लिए गेहूँ देना बंद कर देगा तो इसके जवाब में शास्त्री जी ने कहा था कि हम स्वाभिमान से भूखे रहना पसंद करेंगे, किसी के सामने भीख मांगनेकी जगह। और शास्त्री जी देशवासियों से निवेदन किया कि जब तक अनाज की व्यवस्था नहीं हो जाती, तब तक सब लोग सोमवार का व्रत रखना चालू कर दें और खाना कम खाया करे।

4 जब शास्त्री जी ताशकंद समझौते के लिए जा रहे थे तो उनकी पत्नी ने कहा कि अब तो इस पुरानी फटी धोती की जगह नई धोती खरीद लीजिये तो शास्त्रीजी ने कहा- इस देश में अभी ऐसे बहुत से किसान हैं जो फटी हुई धोती पहनते हैं, इसलिए मैं अच्छे कपड़े कैसे पहन सकता हूँ? क्योंकि मै उन गरीबों का ही नेता हूँ अमीरों का नहीं और शास्त्री जी वही फटी पुरानी धोती हाथ से सीलकर ताशकंद समझौते के लिए गए।

5 जब पाकिस्तान से युद्ध चल रहा था तो शास्त्रीजी ने देशवासियों से कहा कि युद्ध में बहुत रुपये खर्च हो सकते हैं इसलिए सभी लोग अपने फालतू के खर्च कम कर दें, और जितना हो सके सेना को धनराशि देकर सहयोग करें और खर्च कम करने वाली बात शास्त्रीजी ने उनके खुद के दैनिक जीवन में भी उतारी। उन्होंने उनके घर के सारे काम करने वाले नौकरों को हटा दिया था और खुद ही अपने कपड़े धोते थे, और खुद ही उनके घर की साफ-सफाई और झाड़ू पोंछा करते थे।

6 शास्त्रीजी कद में दिखने में जरूर छोटे थे पर वे सच में बहुत बहादुर और स्वाभिमानी थे।

7 जब शास्त्रीजी की मृत्यु हुई तो कुछ नीच लोगों ने उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लगाए। जांच होने के बाद पता चला कि शास्त्रीजी के बैंक के खाते में मात्र 365 रूपये थे। इससे पता चलता है की शास्त्री जी कितने ईमानदार थे।

8 शास्त्रीजी अभी तक के एक मात्र ऐसे प्रधानमंत्री रहे हैं जिन्होंने देश के बजट में से 25 प्रतिशत सेना के ऊपर खर्च करने का फैसला लिया था। शास्त्रीजी हमेशा कहते थे कि देश का जवान और देश का किसान देश के सबसे महत्त्वपूर्ण इंसान हैं, इसलिए इन्हें कोई भी तकलीफ नहीं होना चाहिए। और फिर शास्त्री जी ने 'जय जवान जय किसान' का नारा दिया।

9 जब शास्त्रीजी ताशकंद गए थे तो उनकी संदिग्ध परिस्थितियों मे नृत्यु हो गई थी। इस रहस्य पर आज तक पर्दा पड़ा है।

10 शास्त्री जी जातिवाद के खिलाफ थे इसलिए उन्होंने उनके नाम के आगे श्रीवास्तव लिखना बंद कर दिया था।

हम धन्य हैं कि हमारी भूमि पर ऐसे स्वाभिमानी और देश भक्त इंसान ने जन्मलिया। यह बहुत गौरव की बात है की हमें शास्त्री जी जैसे प्रधान मंत्री मिले। जय जवान! जय किसान! शास्त्री जी जिंदाबाद! (संकलित)

वेद-संदेश

बसना और विहँसना सहज उपासना स्रोत समझना

❑देवनारायण भारद्वाज, 'वरेण्यं' अवन्तिका (प्रथम)
रामघाट मार्ग, अलीगढ़-२०२००१ (उ० प्र०)

महीनों की प्रतीक्षा के बाद आश्रम का वार्षिकोत्सव एवं भण्डारा हुआ। अन्यान्य लोगों के साथ भक्त ध्यानचन्द्र भी इसमें सम्मिलित हुए। मध्याह्नोपरान्त सत्संग हुआ, जिसमें ध्यानचन्द्र सबसे आगे की पंक्ति में बैठे। अभी गुरु जी का उपदेश प्रारंभ ही हुआ था कि ध्यानचन्द्र की आंख लग गयी। गुरु जी ने टोक दिया- ध्यानचन्द्र! सो रहे हो? ध्यानचन्द्र ने आँखें खोलते हुए उत्तर दिया- 'नहीं महाराज' उपदेश फिर ओ बढ़ा। देखते क्या हैं कि ध्यानचन्द्र फिर सो गए। गुरु जी ने फिर सतर्क करते हुए कहा-ध्यानचन्द्र! सो रहे हो? उन्होंने फिर वही उत्तर दिया- नहीं महाराज। गुरु शिष्य का सही संवाद एक बार फिर दोहराया गया। ध्यानचन्द्र के चौथी बार सोने पर गुरु जी ने अपने सम्बोधन में ऐसा रूपान्तर कर दिया, कि ध्यानचन्द्र को पूरे प्रवचन में नींद नहीं आई। ध्यानचन्द्र के सो जाने पर इस बार गुरु जी ने प्रश्न किया-ध्यानचन्द्र! जी रहे हो? उन्होंने फिर अपना वही पुराना उत्तर दोहरा दिया-नहीं महाराज! इसे सुन सारी सभा खिलाखिलाकर हँस पड़ी और अब जग हँसाई होते देखकर ध्यानचन्द्र की नींद उड़ गयी। यह हास्य प्रकरण एक ध्यानचन्द्र पर ही नहीं, सारे संसार पर घटित होता है, जिसे सन्त कबीर ने देखा और कह पड़े-

सुखिया सब संसार, खावै और सोवै।
दुखिया दास कबीर जागै और रोवै।।

माली अपनी बगिया में गया। आज उसको अपने बहाये गये पसीने की बूँदें-खिले हुए फूलों में दिखाई दीं, और उसके ओंठ भी मुस्कान से खिल उठे। अपने अभी अभी रोग से मुक्त हुए बच्चे के मुख पर पहली मुस्कान देखते ही, माता के अधर भी मुस्कान से खिल उठे। विद्यालय में उत्तम प्रस्तुति के फलस्वरूप गुरुजी ने बच्चे को एक कलम पुरस्कार दी। वह प्रसन्न मन से कलम परिवार में लेकर आया और मुस्काते हुए सभी को दिखाया। परिवार के छोटे-बड़े सभी सदस्यों के मुख मुस्कान से खिल उठे। माली ने पौधों को सुडौल बनाने के लिए उनकी खूब छंटाई-तुड़ाई की, माता ने बच्चे को सुयोग्य बनाने के लिए उसकी खूब खिंचाई, और गुरुओं ने अपने शिष्यों को सफल बनाने के लिए उनकी पिटाई भी की, किन्तु आज उनकी प्रफुल्लता, प्रसन्नता एवं सफलता पर दोनों पक्षों के मुख पर खिली हुई मुस्कान एक बिन्दु एक एकाकार हो रही है, और ये सभी दृश्य उपासना की परिभाषा को परिलक्षित कर रहे हैं। इसी प्रकार लौकिक जगत् की उपलब्धियाँ पारलौकिक व्योम में अल्पज्ञ आत्मा को सर्वज्ञ परमात्मा की अनुभूति का माध्यम बन जाती हैं। यह व्योम आपको आकाश की ऊँचाई पर ही नहीं, हृदय की गहराई में अवस्थित मिल जाता है। एकान्त में आसन लगाकर कीर्तन करना या मानसिक-वाचिक जाप करना भी उपासना की श्रेणी में आता है। पर, महर्षि पतंजलि की अनुभूति ''तज्जपस्तदर्थभावनम्'' हमारा सहज मार्गदर्शन करती है। नाम कीर्तन के साथ ईश्वर के गुणों से आत्मा को भावित व विभूषित करना ही उपासना है, जिसकी फलश्रुति प्रत्यक्ष जगत् में दिखाई देती है।

उस दिन गुरुजी ने एक वेदमन्त्र को आधार बनाकर अपना मनोहारी उपदेश दिया। मन्त्र द्रष्टा ऋषि ब्रह्मा ने अपने एक पंक्ति के वेदमन्त्र में इस उपासना प्रकरण को खोलकर रख दिया है।

ओं भवद्वसुरिदद्वसु संयद्वसुरायद्वसुरिति त्वोपास्महे वयम्।।
(अथर्व १३ ४(६)५४)

अर्थात् हे परमात्मन् तू (भवद्वसुः) सांसारिक धन-साधन प्राप्त कराने वाला, (इदद्वसुः) श्रेष्ठ पुरुषों को ऐश्वर्यवान् करने वाला, (संयद्वसुः) पृथ्वी आदि लोकों को नियम में रखने वाला, (आयद्वसुः) निवास का विस्तार करने वाला है। (इति) इसी प्रकार (वयम्) हम (त्वा उपास्महे) तेरी उपासना करते हैं।

मन्त्र में चार बार आये 'वसुः' शब्द का हिन्दी सरलार्थ 'बसना या बसाना' है। अपने पुराने जर्जर होते शब्दकोश में 'बसना' शब्द चार अर्थों को व्यक्त करता है- १ निवास करना २ जनपूर्ण होना ३ ठहरना ४ सुगन्ध से पूर्ण होना। मन्त्र में चार बार आये (वसुः) बसना एवं बसाने के साथ एक-एक उपसर्ग (भवद्) सांसारिक धन-साधन प्राप्त कराने वाला, (इदद्) श्रेष्ठ पुरुषों को ऐश्वर्यवान करने वाला, (संयद्) पृथ्वी आदि लोकों को नियम में रखने वाला और (आयद) निवास का विस्तार करने वाला-परमेश प्रभु को बताया गया है। लेखक को इन चार सोपानों में भक्त के भगवान के समीप पहुँचने का अथवा उसकी उपासना का

विज्ञान दिखाई देता है। कोई व्यक्ति किसी कलाकार के पास पहुँचना चाहता है। वह इस कलाकार के काम में हाथ बंटाने लगता है तो कलाकार उसे अपना लेता है। इसी प्रकार लोक में उपर्युक्त चार श्रेणी के कार्यों को करते हुए व्यक्ति परलोक में भी प्रभु का प्यार अर्जित कर लेता है। उक्त सोपान यहाँ इन चार बिन्दुओं द्वारा प्रकट किए जाते हैं। १ भव निवास, २ वैभव निवास, ३ उद्‌भव निवास और ४ महानुभव निवास। प्रत्येक बिन्दु का संक्षेप में निर्वचन इस प्रकार करते हैं:-

१ भव निवास= हाथ-हृदय-मस्तिष्क में समन्वय बनाकर रहें। संसार में न केवल ऊपर, न केवल नीचे, प्रत्युत ऊपर नीचे की सभी दिशाओं का सन्तुलन बनाकर जियेंगे तो दुःख से बचकर सुख के मार्ग पर चलेंगे। जीवन जीने का एक दृष्टिकोण है-

कबिरा खड़ा बाजार में सबकी माँगे खैर।
ना तो किसी से दोस्ती ना तो किसी से बैर।।

यह दृष्टि किसी वीतराग सन्त की हो सकती है, जो किसी गुफा-कन्दरा या जंगल में रहता है और कभी-कभी बाजार में आ जाता है। संसार के ग्राम-नगर में बसने वाले व्यक्ति को नीर-क्षीर विवेक के साथ जीना पड़ेगा। इससे उत्तम उसकी दृष्टि है- साईं इतना दीजिए जामे कुटुम समाय। मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भुखा जाय।। यह दृष्टिकोण अच्छा तो है किन्तु सर्वोत्तम नहीं। इन दोनों से भी निकृष्ट-एक दृष्टि यह भी है-

अजगर करे न चाकरी पंछी करे न काम।
दास मलूका कह गये सबके दाता राम।।

इन सबसे ऊपर प्रगतिशील वेद का निर्देश है-

कृतं में दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।।

(अथर्व ७/५०/८)

भावार्थ- मनुष्य अपने पूर्ण पुरुषार्थ एवं प्रभु-भक्ति से पशु, भूमि, इन्द्रिय, निर्धनता एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर सुखी रहे। मनुष्य के पास कोई सम्पत्ति है या नहीं है, किन्तु प्रभु प्रदत्त शरीर से बढ़कर कोई सम्पदा नहीं हो सकती है।

मनुष्यों को अपनी बाल्यावस्था के बाद, या तब से ही अपनी आजीविका को कमाना पड़ता है। एक श्रमिक दिनभर श्रम करके अपने दिहाड़ी सँभालते हुए घर जा रहा था। मार्ग में पड़ने वाले मन्दिर में दर्शनार्थ रुक गया। शानदार सवारी से एक श्रेष्ठि उतरे और अपनी जूतियाँ बाहर छोड़कर देवमूर्ति की ओर चले गये। वह श्रमिक उस दिन मूर्तियों से अधिक स्वर्णाभूषण जड़ित जूतियों को ही देखता रह गया। सोचने लगा- कहाँ ये सुन्दर चमकदार जूतियाँ और कहाँ बेवाईयों से फटे ये मेरे नंगे पैर? उसके इस पश्चाताप का सहज ही प्रायश्चित भी हो गया। उसने देखा कि हाथों के बल घिसट-घिसट कर एक भिक्षुक मंदिर की ओर बढ़ रहा है। इस दृश्य को देखकर देवमूर्ति तक पहुँचने से पूर्व ही मानो उसके हृदय में साक्षात् परमात्मा प्रकट हो गये। उसके जुड़े हुए दोनों हाथ व सिर हृदय की ओर झुक गये। वह बोल पड़ा- प्रभु! आपका धन्यवाद! श्रेष्ठि को स्वर्णाभूषण जड़ित जूतियाँ शुभ हों-मुझे मेरे पैर ही मंगलकारी बने रहें।

२ वैभव निवास- महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का भरी सभा में शास्त्र-सम्मत उपदेश समाप्त हुआ, तभी रुई धुनने वाला धुना उनके पास आया और बोला- महाराज् मेरे जैसे अनपढ़, गरीब का उद्धार कैसे होगा? स्वामीजी ने उसे बड़ी सरलता से समझा दिया। ग्राहक की जितनी रुई आये, उसकी पूरी रुई धुनकर रजाई भर दो। अपनी इसी ईमानदारी की मजदूरी से अपने परिवार का पालन करो। यही तुम्हारी पूजा और उद्धार का आधार होगी।

राजा भोज कवि और कविता प्रेमी थे। एक नवागत कवि ने राजधानी में रहने की इच्छा प्रकट कर दी। कर्मचारियों के द्वारा उसके लिए मकान की खोज की गयी। वहाँ एक से एक बढ़कर विद्वान निवास कर रहे थे। एक जुलाहे को अविद्वान समझकर मकान खाली करने का आदेश दिया गया। उसने राजा भोज के दरबार में पहुँचकर अभ्यर्थना की-महाराज अपने काम के साथ-साथ मैं भी साधारण कविता कर लेता हूँ। प्रयत्न करूँ तो अच्छी कविता कर सकता हूँ। उसके श्लोक के अन्तिम तीन शब्दों ने न केवल उसका मकान उसे वापस करा दिया, प्रत्युत उसे स्वर्ण मुद्राओं का पुरस्कार भी प्रदान करा दिया। 'कवयामि, वयामि, यामि' प्रथम शब्द 'कवयामि' से 'क' हटकर 'वयामि' रह गया और वयामि से 'व' हटकर यामि रह गया। अर्थात् मैं कविता करूँ, बुनाई करूँ अथवा घर छोड़कर चला जाऊँ। अपना घर द्वार सजाने को औरों का घर बरबाद न कर।

श्रेष्ठ शासक वही होता है जो अपनी पूर्ण प्रजा में विद्या एवं सद्‌गुणों के विकास की व्यवस्था करता है।

मनुष्य अपने जन्म-जन्मान्तर के संचित संस्कारों के वशीभूत होकर अपने विकास के राजपथ पर चलते हैं। शासक एवं आचार्यगण उनके कुसंस्कारों को दबाकर अच्छे संस्कारों को प्रखर बनाते हैं। कम्प्यूटर युग से दशाब्दियों पहले सिनेमा के विज्ञापन पट बनाने वाले अशिक्षित श्रमजीवी फिदा हुसैन जी उच्चकोटि के चित्रकार बन गये। उनके चित्र लाखों रुपये में बिकने लगे। इससे उनका विकास तो हुआ, किन्तु कुछ अश्लील चित्रों के कारण उन्हें अपने प्यारे देश से पलायन करना पड़ा। इक्का तांगा चलाकर जीविका कमाने वाले महाशय धर्मपाल मसालों के शंहशाह होकर अपार ऐश्वर्य के स्वामी बने और उन्होंने अपने वैभव से शिक्षालय, चिकित्सालय, धर्मालय बनाकर असहायजनों

के उद्धार के कीर्तिमान को स्थापित कर दिया। साधारण धन में मुद्राओं की चमक होती है, किन्तु इस ऐश्वर्य में धन-लक्ष्मी की चमक के साथ परमैश्वर्यशाली परमात्मा की दिव्य उपासना की दमक भी होती है। वेदमाता अपने पुत्रों को सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं।

मूर्धाहं रयीणां मूर्धा समानानां भूयासम्'' (अथर्व १६/३/१) अर्थात् हे ईश्वर! श्रम से ऐश्वर्य कमाकर मैं साम्र्थ्यवान हो जाऊँ, उसका हित-परहित में निवेश करके में शीर्ष स्थान को प्राप्त करूँ।

३ **उद्‌भव निवास**- 'उद्‌भव' से तात्पर्य नवजन्म, सृजन एवं निर्माण से है। यह कार्य कोई एक अकेला व्यक्ति नहीं कर सकता है। शिशु के नवजन्म के लिए पति-पत्नी दो की, फिर परिवार की आवश्कता होती है। परिवारों के द्वारा ही समाज व राष्ट्र का और राष्ट्रों के द्वारा ही विश्व का कल्याण व उत्थान होता है। वसु आठ होते हैं- पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य, चन्द्र एवं नक्षत्र। यही बसने और बसाने में सहायक होते हैं। इनमें कुछ प्रकाश लोक हैं और कुछ प्रकाश रहित लोक हैं। प्रभु इनमें अद्‌भुत समन्वय स्थापित करते हैं। सूर्य प्रकाश लोक है और चन्द्रमा अन्धकार पूर्ण है। सूर्य के तापजन्य प्रकाश को चन्द्रमा प्राप्त करता है और उसे शीतजन्य बना देता है। सूर्य जहाँ सृष्टि में सर्वप्रकारेण सृजन करता है, चन्द्रमा उसी सृजन में अपने सोम के द्वारा गुणवर्धन करता है। मानव मात्र को इस समन्वय के विज्ञान को अपनाने की आवश्यकता है।

जंगल में लगी आग के मध्य एक लंगडा और दूसरा अंधा फंस गया। लंगडे ने आग को देख लिया और चिल्ला पड़ा- आग! आग!! वह नहीं सकता था भाग। तभी अन्धा गया जाग-वह सकता था भाग। दोनों में मेल हो गया। अंधे ने लंगड़े को पीठ कर बैठाया। लंगड़े ने मार्ग दिखाया। इस प्रकार दोनों ने अपने को जलने से बचाया। यह समन्वय का सिद्धांत सृष्टि के हर क्षेत्र में प्रतिपालनीय है। आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम राम को इस समन्वय के विज्ञान पर पूर्ण अधिकार था, जिसके कारण जंगल में रहते हुए, बिना अपने राज्य अयोध्या से सेना बुलाये, वनवासियों, गिरिवासियों, आदिवासियों से सहायता लेकर उस अहंकारी रावण का विनाश करके यह लोकोक्ति चरितार्थ कर दी-

एक लख पूत सवा लख नाती,
ता रावण घर दिया न बाती।

दुर्योधन ने समन्वय किया किन्तु विवेकहीन, अवैज्ञानिक। अपने पक्ष के सभी योद्धाओं के मारे जाने के बाद भी वह साधारण सेनानी शल्य पर विजय का भरोसा करके युद्ध लड़ता रहा और कौरवों के सर्वनाश का कारण बना। पाण्डवों ने योगिराज कृष्ण के समन्वय से ऐतिहासिक विजय का वरण किया।

४ **महानुभव निवास**- जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि 'बसना' शब्द का एक अर्थ सुगन्ध करना भी है। उपर्युक्त तीन पग धरने के बाद व्यक्ति को मिलता है वह धरातल, जहाँ उसका विस्तार होता दिखाई देता है। फूल एक उद्यान में खिलता है, उसकी सुगन्धि दूर-दूर तक फैल जाती है। मनुष्य भले एक ही स्थान पर सीमित रहे, किन्तु उसके यश की सुगन्धि दूर-दूर तक फैलकर उसे विश्वव्यापी बना देती है। भारतवर्ष अथवा सम्पूर्ण एशिया के लिए यह बड़े स्वाभिमान का शताब्दी वर्ष है। पहला साहित्य का नोबल पुरस्कार रवीन्द्र नाथ ठाकुर को उनकी काव्यकृति 'गीतांजलि' पर १९१३ में प्राप्त हुआ था। पराधीनता की बेड़ियों में जकडी भारतमाता को अपने इस सपूत पर अपार गर्व का अनुभव हुआ था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने मानस पुत्र पण्डित श्यामजी कृष्णवर्मा को ओक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में संस्कृत का प्रोफेसर बनाकर इंग्लैण्ड भेजा था, जिन्होंने विश्व के मुख्य विकसित देशों में भारत के गौरव का घोष कर दिया था। नेताजी सुभाष चन्द्र बोस ने अंग्रेजों से युद्ध करके और स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो (अमेरिका) में जाकर वैदिक धर्म की धूम मचा दी थी। ऐसे अनेक भारत-नक्षत्रों ने विश्व-गगन में विजय पताका फहराकर जहाँ एक ओर भारतमाता की मान-मर्यादा की रक्षा की, वहीं दूसरी ओर स्वयं को यशस्वी बनाकर अपना विश्वव्यापी विस्तार कर लिया।

सद्‌गुणी संसार जिसका सत्कार करता है, सर्वगुणी परमेश प्रभु भी उसे प्यार करता है। उपासना का यही परिष्कार मनुष्य का पुरस्कार है। कथन का विस्तार न करके सामगान (साम-४४५) से ही आलेख का उपसंहार करते हैं-

अर्चन्त्यर्कं मरुतः स्वर्का आ स्तोभति श्रुतो युवा स इन्द्रः।।

अर्थात् - जो सज्जन वेद मन्त्रों को श्रद्धा पूर्वक गा-गाकर ईश्वर की स्तुति प्रार्थना व उपासना करते है; दयालु प्रभु उनकी भावनाओं को अवश्य स्वीकार करते हैं। वे उनके दुःखों को दूरकर सुख प्रदान करते हैं। अतः सब मनुष्यों को उनके सान्निध्य को प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन मन्त्रोच्चारण पूर्वक सन्ध्या-हवन व सत्संग करते रहना चाहिए। इस प्रकार महात्मा भर्तृहरि जी के अनुभूत प्रयोग उसके जीवन में सार्थक हो उठते हैं।

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धाः कवीश्वराः।
नास्ति तेषां यशः काये जरामरणजं भयम्।।

रसों में सिद्ध व पुण्यवान क्रांतिदर्शी वे कवीश्वर धन्य हैं, जिनके यश रूपी शरीर में न बुढ़ापे का भय है और न मृत्यु का। दीन हो या उच्चासीन प्रभु प्यारे से जिसका सम्बन्ध है- उसको हरदम आनन्द ही आनन्द है।

कहानी

प्रतीक्षा

❐**रामफल सिंह आर्य**, ८७/एस-३, बी एस एल कालोनी सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि० प्र०)

प्रतिदिन की भांति आज भी सुचित्रा प्रातः काल ही नहा धो कर बाहर बरामदे में आकर कुर्सी पर बैठ गई और बार-२ मुख्य द्वार की ओर देखने लगी। लगभग चालीस पैंतालीस वर्षों से उसकी यही दिनचर्या थी। प्रातः दस बजे से लेकर बारह बजे तक वह इसी स्थान पर आकर विराज जाती और बाहर द्वार की ओर दृष्टि जमाये रखती, यदि डाकिया बारह बजे से पहले आ जाता तो वह पहले उठ जाती और यदि न आता तो बारह बजे के बाद भारी कदमों से उठ कर इधार-उधर टहलती रहती और उदास एवं चिन्तित आंखों से बागीचे के वृक्षों को देखती रहती। अब बसन्त ऋतु का आगमन हो चुका है और बागीचे के सभी पेड़ों पर नई कोमल पत्तियां एवं फूल झांकने लगे हैं। सारा दिन इन पेड़ों पर चिड़ियों एवं अन्य पक्षियों का मधुर गान गूंजता रहता है। कई-कई बार तो ऐसा प्रतीत होता है मानो उनके कई समूह बने हुए हैं जिनमें आपस में कोई वाद-विवाद छिड़ा हुआ है। जब अधिक देर तक भी चिल्लाने के बाद भी कार्य सिद्धि न होती तो उनके कई वर्ग फुर्र-फुर्र करते आकाश में उड़ान भरने लगते। फिर अचानक आ कर पेड़ों पर पंचायत जमा लेते। पक्षियों के इस समूह में अब मधुमक्खियां एवं भंवरे भी सम्मिलित हो चुके हैं परन्तु इनका अपना संसार है। इनमें पक्षियों जैसा वाद-विवाद नहीं है। अनेक प्रकार की रंग बिरंगी तितलियों की छटा की तो बात ही मत पूछो। मानो बसन्त का सबसे अधिक प्रभाव इनके ऊपर ही है। अपने रंग बिरंगे पंखों को हिलाती एक स्थान से दूसरे स्थान तक मंडराती फिरती हैं। यद्यपि इनका कोई स्वर तो नहीं है परन्तु इनकी चपलता एवं चंचलता देखते ही बनती है। पूरे वातावरण में एक विचित्र सी सुगन्ध एवं मस्ती बिखरी रहती है। जितने रंग बागीचे के पुष्पों में हैं, उससे अधिक तितलियों के पंखों में है। दोनों में मानो एक प्रतिस्पर्धा सी लगी है कि देखें कौन आगे निकलता है। सारी प्रकृति जो पीछे लगभग दो मास से शीत के भय से आक्रान्त थी, अब अंगड़ाई लेकर जग उठी है और अपने शृंगार से सबको आह्लादित कर रही है। परन्तु इस वातावरण में भी सुचित्रा का मन अशांत है। यदि कोई बसन्त की इस मस्ती से नितान्त अछूता दिखाई देता है तो वह सुचित्रा ही है। इसने अपने घर के विशाल आंगन में अनेक प्रकार के वृक्ष लगा रखे हैं, जिनमें अधिकतर फलदार वृक्ष हैं। आम, जामुन, बेर, आडू एवं सन्तरे के पेड़ों के अतिरिक्त अनेक सजावटी पौधे भी हैं। पेड़ों से यह प्रेम इसके पति श्रीकान्त के कारण इसको हुआ। ज्यों-२ ये नये पत्ते एवं पुष्प निकल रहे हैं, त्यों-२ सुचित्रा के मन में यादों का समुद्र उमड़ पड़ा है। प्रत्येक वर्ष पेड़ों के पुराने पत्ते गिरते जाते और नये उगते रहते और उसी अनुपात से उगती जाती सुचित्रा के मन में यादों की फसलें।

सुचित्रा अपने माता पिता की इकलौती सन्तान थी और अपने पिता की बहुत लाडली। स्नेह तो उसकी माता भी करती थी, परन्तु पिता की तो मानो वह प्राण ही थी। बचपन से ही सुचित्रा बहुत संवेदनशील थी। किसी का भी दु:ख एवं पीड़ा उससे देखी नहीं जाती थी। कोई कुछ छोटी सी भी बात बोल देता था तो वह उसे भी बड़ी गम्भीरता से ले लेती। बड़ी होने पर पिता ने योग्य वर ढूंढना शुरू किया और श्रीकान्त के रूप में उन्हें उपयुक्त दामाद मिल गया। श्रीकान्त अपने पिता के तीसरे और सबसे छोटे पुत्र थे। इनका परिवार बहुत सम्पन्न एवं कुलीन था। श्रीकान्त भी बहुत योग्य थे। पढ़ाई में बहुत आगे रहते थे, परन्तु इन्हें साहसिक कार्य अधिक अच्छे लगते थे। प्रायः कहा करते थे कि कार्यालयों में बैठ कर एक लीक पर सदैव एक जैसा जीवन जीने वाले लोग बड़े नीरस होते हैं। जीवन में प्रतिदिन कुछ नया होना चाहिये। यह नया भी ऐसा हो जो चुनौतीपूर्ण और साहसपूर्ण हो। दूसरों के लिये सदैव अपनी प्राणों को संकट में डालने को तत्पर रहते थे। परन्तु स्वभाव अन्यन्त भावुक था। अपने इसी चाव के कारण श्रीकान्त सेना में एक अधिकारी बन गये थे। सुचित्रा के साथ विवाह बन्धन में बन्ध कर तो मानो श्रीकान्त का जीवन ही बदल गया। दोनों में इतना प्रगाढ़ प्रेम था कि एक दिन की दूरी भी सहन न होती थी। सायंकाल को जब श्रीकान्त के घर आने का समय होता तो सुचित्रा द्वार पर खड़ी उनकी राह देखती रहती थी। इनके दो पुत्र उत्पन्न हुए और एक पुत्री। श्रीकान्त सुचित्रा की छोटी से छोटी बात का भी बहुत ध्यान रखते थे। दोनों में कभी किसी बात पर कभी अनबन हुई हो ऐसा समय कभी आया ही नहीं। बड़ा बेटा विशाल उस समय छठी कक्षा में पढ़ता था। छोटा विक्रम चौथी कक्षा में और बेटी सुमित्रा दूसरी कक्षा में थी कि युद्ध का समय आन पहुंचा। सेना में अपने साहसिक कार्यों के लिये प्रसिद्ध श्रीकान्त ने स्वेच्छा से उस मोर्चे को मांग कर लिया जहाँ पर सबसे अधिक खतरा था। सुचित्रा को तो इस बात की जानकारी भी न थी। श्रीकान्त ने इतना ही कहा कि आदेश आ गये हैं, सीमा पर जाना है। जाते समय मिलकर भी न गया। केवल

दूरभाष पर ही बात हुई। सुचित्रा से सदैव प्रत्येक बात को पूरी तरह सांझी करने वाला श्रीकान्त इस समय एकदम बदला हुआ था।

वीर सैनिक तो युद्ध की प्रतीक्षा करते ही रहते हैं, परन्तु श्रीकान्त में तो जैसे एक क्रान्ति जाग उठी थी और मोर्चे पर अपनी टुकड़ी का संचालन करते समय उसमें अदम्य साहस झलकता था। उसकी अमोघ योजना के समक्ष शत्रुदल कहीं टिक न पाता था। एक के पश्चात् दूसरी विजय उसके चरण चूम रही थी। उसके मुख्यालय में उसके शौर्य की गाथा गूंज रही थी। रेड़ियो पर उसका नाम सुनकर सुचित्रा का मस्तक गर्व से ऊंचा उठ जाता था। कुछ समय के उपरान्त युद्ध समाप्त हो गया। जो जीवित बचे वे अपने घरों को लौट आये और जिन्होंने वीरगति प्राप्त की वे स्मृतियां बन कर लोगों के हृदयों में समा गये। श्रीकान्त का भी समाचार आया परन्तु गुम होने का आया। अब क्या पता वह शत्रु द्वारा बन्दी बना लिया गया था अन्यथा कहीं भटक गया था या वीरगति को प्राप्त हुआ था। इस समाचार को सुनकर सुचित्रा पर तो जैसे वज्रपात हुआ। एकदम सन्न सी रह गई। घर परिवार वालों एवं सम्बन्धियों ने बहुत समझाया कि वह कहीं फंस गया होगा, आ जायेगा। यह तो सुचित्रा भी जानती थी कि अवश्य ही श्रीकान्त कहीं फंस गये हैं, परन्तु दिल का क्या करे? रह-२ कर उसे श्रीकान्त की याद आती थी और सामने पहाड़ जैसा जीवन भी दिखाई देता था। अकेले वह भला कैसे सारे उत्तरदायित्व निभा पायेगी। श्रीकान्त के बिना तो वह जीवन की कल्पना भी न कर सकती थी। सेना के उच्च अधिकारियों से वह कई बार जाकर मिली, प्रत्येक बार आश्वासन तो मिला, परन्तु कोई समाचार न मिल सका। जितनी भागदौड़ वह सेना के मुख्यालय में कर सकती थी, की और फिर हार कर बैठ गई।

समय धीरे-२ अपनी गति से व्यतीत होता रहा। श्रीकान्त ने जो पेड़ घर के आंगन में लगाये थे, वे बढ़ते रहे और उन्हीं के साथ बढ़ती रही उनकी तीनों सन्तानें। अब लोगों ने मान लिया था कि श्रीकान्त वापस लौट कर नहीं आने वाला, परन्तु सुचित्रा यह मानने को कभी तैयार न थी। उसे पूर्ण विश्वास था कि श्रीकान्त जीवित हैं और एक न एक दिन अवश्य ही लौट कर आयेंगे। तीनों बच्चों का विवाह हो गया, बेटी अपनी ससुराल चली गई और दोनों बच्चे विशाल एवं विक्रम भी अपने-२ परिवार के साथ अलग-२ स्थानों पर रहने लगे। उन्होंने अपनी माता जी को अपने साथ ले जाने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु सुचित्रा इस स्थान से हिलने का नाम न लेती थी। आंगन में खड़े पेड़ों की छाया उसे श्रीकान्त की छाया की भाँति लगती थी। दोनों ने मिलकर बड़े चाव से इन पेड़ों को लगाया था। पति-पत्नी दोनों को ही प्रकृति से बहुत लगाव था। इन्हीं पेड़ों के बीच में घूमते हुए उन्होंने न जाने कितना समय व्यतीत किया था। कई बार वह पेड़ों के नीचे खड़ी होती तो श्रीकान्त एकाएक किसी टहनी को हिलाकर सुचित्रा के ऊपर उसके पुष्प एवं पत्तों को झाड़ देते थे और फिर उसे "फूलों की मलिका" कह कर पुकारते। प्रतिवर्ष आंगन में पेड़ों की संख्या बढ़ती जाती। यद्यपि पेड़ों के कारण सर्दी में कुछ कठिनाई भी आती और पतझड़ में सारा आंगन सूखे पत्तों से भर जाता, परन्तु सुचित्रा को कभी इसमें असुविधा न होती थी। इन पेड़ों में अनेकों पक्षियों के घोंसले बने हुए थे और उनके परिवार भी फल फूल रहे थे।

बच्चों के जाने के उपरान्त सुचित्रा का जीवन एक प्रकार से किसी साधिका की भाँति हो गया। प्रातः काल से बारह बजे तक वह डाकिये की प्रतीक्षा करती और उसके पश्चात् सायंकाल तक पेड़ों की देखभाल में लगी रहती। जब डाकिया आता और कोई पत्र देकर चला जाता तो वह बड़ी उत्सुकता से भेजने वाले का नाम देखती। प्रतिदिन वह मन में पक्का विश्वास लेकर बैठती कि आज अवश्य ही श्रीकान्त का कोई न कोई समाचार आयेगा। अभी तक तो उसे निराशा ही हाथ लगी। यदि कोई इस बारे में कुछ कहता तो वह बुरा भी मान जाती। ज्यों-२ उसकी आयु बढ़ रही थी त्यों-२ श्रीकान्त के आने की आशा भी बढ़ रही थी।

पिछले कई दिनों से उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं था, ज्वर लगातार आ रहा था। पहले-पहले तो उसने अधिक चिन्ता न की, परन्तु अब ज्वर उसे जकड़ता जा रहा था। जब उसके रोगी होने का समाचार बच्चों को पता चला तो वे उसे लेने आये। बोली- 'मुझे पक्का विश्वास है कि तुम्हारे पिता जी कुछ ही दिन में यहाँ आने वाले हैं। अतः मैं इस स्थान को छोड़ कर नहीं जाऊँगी।' बच्चे जानते थे कि उसे यहाँ से हटाना संभव नहीं है, अतः वे वहीं पर रुक कर उसकी देखभाल कर रहे थे। परन्तु रोग बढ़ता जा रहा था और उसकी दशा भी बिगड़ चुकी थी। आज प्रातः से ही उसकी स्थिति चिन्ताजनक थी। डाक्टर ने हस्पताल ले जाने को कहा, परन्तु वह नहीं मानी। बच्चे भी विवश थे। उसने कहा कि मुझे बाहर आंगन में ले चलो। एक कुर्सी पर बैठा कर वे उसे बरामदे में ले आये। वह द्वार की ओर दृष्टि जमा कर बैठ गई। बच्चे सोच रहे थे कि माता जी का अपने पर नियन्त्रण नहीं रहा। अचानक द्वार से एक वृद्ध प्रविष्ट हुआ। चेहरा बदल गया था, परन्तु सुचित्रा ने उसे झट पहचान लिया और एकदम कुर्सी से उठकर उसकी ओर दौड़ी। 'श्रीकान्त-- श्रीकान्त-- तुम आ गये। मुझे पूर्ण विश्वास था कि तुम अवश्य आओगे। कहाँ थे तुम-- इतने दिन-- कहाँ थे!' सुचित्रा की आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। वे दोनों वहीं भूमि पर

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

पण्डित चमूपति जी की अूमल्य कृति **'संध्या-रहस्य'** का धारावाह प्रकाशन

फिर आचमन और मनसा परिक्रमा

मनसा परिक्रमा का अर्थ मन द्वारा चक्कर काटना है। जिस-२ दिशा का वर्णन मंत्रों में हुआ, उस का चिन्तन करते हुए परमात्मा की सर्वव्यापकता का निश्चय करना चाहिए।

आचमन दूसरी बार

इस स्थल पर 'शन्नोदेवीः' मन्त्र से फिर तीन बार आचमन करो। कारण यह है कि अघमर्षण से पूर्व प्राणायाम किया है। प्राणायाम से कण्ठ, हृदय, उदर और फेफड़ा गर्म हो जाते हैं और शुष्कता का अनुभव होता है। सूखे कण्ठ को तर करने तथा व्याकुल हृदय को शांति देने के लिए आचमन अत्यन्त लाभकर है। प्राणायाम और आचमन में अघमर्षण का अन्तर इसलिए रक्खा कि उष्ण अंगों पर तत्काल पानी डालना हानिकारक है। पथिक थका मांदा मार्ग से आए, तो उसे झट ही पानी पीने नहीं देते, न अंगों पर ही तत्क्षण जल डालने देते हैं। जैसे पथिक पहले कुछ विश्राम करता है वैसे ही हम भी करते हैं।

यों भी सन्ध्या में कई जगहों पर पानी पीने की आवश्यकता होती है, जिस से मंत्रोच्चारण में सुविधा हो। यदि ऐसे स्थल नियत हों तो व्यवस्था रहती है, इकट्ठी सन्ध्या करते हुए वैविध्य नहीं होता और डेढ़ २ ईंट का अलग-२ मन्दिर होने से फूट नहीं पड़ती। जातीयता में ऐसे नियम बहुत लाभकारी हैं।

मन्त्र का अर्थ हो चुका है।

हम पाठकों के सम्मुख अपना एक वार का अनुभव रखते हैं। संभव है उस का कुछ अंश उपासकवृन्द के हृदय में आ जाए और वह आचमन के प्रयोजन को भली प्रकार जान सके।

मरी से पश्चिम की ओर कोई डेढ़ मील की दूरी पर फेरूमल की बावली है। सड़क से दक्षिण को एक निम्न स्थान में, जहाँ पहुंचने के लिए कोई मील भर नीचे उतरना पड़ता है, और मार्ग में छोटे-बड़े अनेक वृक्ष तथा पौधे आते हैं, यह बावली स्थित है। पथिक की दृष्टि यदि अकस्मात् पड़े भी तो नीचे खड़ा मनुष्य छोटा दीखता है। ऐसा प्रतीत होता है कि वहाँ पार्थिव नहीं, कोई और सृष्टि होगी। हम स्नानार्थ उस बावली पर गए, व्यायाम किया, नहाए, धोए और सन्ध्या के लिए एक पत्थर को आसन बनाया। पत्थर ठण्डा और स्वच्छ है। उसके दोनो ओर झरने का निर्मल पानी मधुर आलाप करता बहा जाता है। वायु शीतल और सुहावनी, धूप अति पवित्र और मनोहर। चारों ओर हरे चील के वृक्षों की गोलाकार पंक्तियाँ। उनका क्रम ऐसा कि मानो किसी कमाण्डर ने अभी फालिन कराया है। मूल से कई फीट ऊपर तक नंगे, फिर नोकीले तीली के आकार के पत्तों से ढके। पत्तों का घेरा भी पहिले चौड़ा, फिर शनैः २ संकुचित होता गया है, यहाँ तक कि अन्त में एक नोक मात्र रह गई है। इस हरी प्राकार से नीचे पहाड़ के ढलान पर सीढ़ियों के रूप में क्षेत्र बोए हुए। सूर्य की किरणें पानी के कणों में विचलित होती हुई सातों रंगों के विचित्र सम्मेलन से तल पर के घास को मखमल और कमखाब की चमक देती हैं। उस पर कोई बादल का टुकड़ा अटका हुआ अति सूक्ष्म मलमल ओढे बालक की भांति घुटने टेक-२ कर पर्वत पर चढ़ा आता है।

प्रकृति-माता के बालक! तू बहुत प्रसन्न है। आ पाठक ! बालक सा सरल चित्त बना और मेरे साथ सन्ध्या कर।

'शंयोरभिस्रवन्तु नः'। अब ज्ञात हुआ इस में क्या रहस्य है। वायु की चपेट आई और शरीर को शांति दे गई। पक्षी चहचहाया, कान ने आनन्द पाया। वृक्षों पर दृष्टि पड़ी और आंखों को अन्जन मिला। जल शान्ति-मय है, वायु शान्ति-मय है, पृथिवी शान्ति-मय है, मैं शान्ति-मय हूँ, मुख क्या, समस्त काया आचमन कर रही है और तृप्त नहीं होती। रोम-रोम से शान्ति देह के अन्दर चूती है। आत्मा ने द्वार खोल दिए, परम शांति का प्रवाह हुआ।

आनन्द कहाँ से चूता है? वह शान्ति का स्रोत, सकल आनन्द का निकास, जड़ चेतन का आत्मा, घट-घट में व्यापक, आत्मा की दिव्य-चक्षु द्वारा देखा गया। कह वाणि! उसी को कह! 'शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये।' अरी शान्ति में निमग्रे! कुछ कहने की शक्ति शेष है?

गुरुमन्त्र दूसरी बार

आचमन के पश्चात् फिर गुरुमन्त्र का ध्यान करें।

मनसा परिक्रमा

ओ३म् प्राची दिगग्निरधिपतिरसितो रक्षितादित्या इषवः। तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो अस्तु। यो३ऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।।१।।

अन्वयः– प्राची (प्राच्याः) दिक् (दिशः) अग्निः अधिपतिः असितः रक्षिता (अस्ति, तस्य) आदित्याः इषवः (सन्ति) तेभ्यः अधिपतिभ्यः रक्षितृभ्यः नमः ३, एभ्यः इषुभ्य नमः २ अस्तु। यः अस्मान् द्वेष्टि यं (च) वयं द्विष्मः तं वः जम्भे दध्मः।

पदार्थ :– (प्राची, प्राच्याः) पूर्व अथवा जिस ओर मुख हो उस (दिक्–दिशः) दिशा का (अग्निः) प्रकाश–स्वरूप ओ३म् (अधिपतिः) राजा है। सो (असितः) बन्धन–रहित (रक्षिता) रक्षक है। उस के (आदित्याः) सूर्य की किरणें अथवा अठतालीस वर्ष के ब्रह्मचारी (इषवः) तीर वा शक्तियां हैं। (तेभ्यः) उन (अधिपतिभ्यः) अधिपति (रक्षितृभ्यः) रक्षक के लिए (बहुवचनमादरार्थम्) (नमः ३) वार २ नमस्कार हो। (एभ्यः) इन (इषुभ्यः) वाणों अथवा शक्तियों के लिए (नमः २) वार २ नमस्कार (अस्तु) हो। (यः) जो (अस्मान्) हम मनुष्यमात्र से (द्वेष्टि) द्वेष करता है, (यम्) जिससे (वयं) हम (द्विष्मः) द्वेष करते हैं, (तं) उसको (वः) आप के (जंभे) न्याय रूप जबड़े में (दध्मः) धरते हैं।।१।।

ओ३म् दक्षिणा दिगिन्द्रोऽधिपतिस्तिरश्चिराजी रक्षिता पितर इषवः। तेभ्यो ---------- दध्मः।।२।।

अन्वयः– दक्षिणा (दक्षिणस्याः) दिक् (दिशः) इन्द्रः ओ३म् अधिपतिः तिरश्चिराजिः (तिरश्चिराजेः) रक्षिता (अस्ति, तस्य) पितरः इषवः (सन्ति)। तेभ्यः ---- पूर्ववत्।।

शब्दार्थ :– (दक्षिणा–दक्षिणस्याः) दक्षिण अथवा दाहिने हाथ की (दिक्–दिशः) दिशा का (इन्द्रः) ऐश्वर्यवान् ओ३म् (अधिपतिः) राजा (तिरश्चिराजिः– जेः) पृष्ठरहित प्राणियों के समूह का (रक्षिता) रक्षक है। उस के (पितरः) विद्वान लोग (इषवः) बाण व शक्तियां हैं। आगे पूर्ववत्।।२।।

ओं प्रतीची दिग्वरुणोऽधिपतिः पृदाकू रक्षितान्नमिषवः। तेभ्यो ------ दध्मः।।३।।

अन्वयः – प्रतीची (प्रतीच्याः) दिक् (दिशः) वरुणः अधिपतिः पृदाकुः (पृदाकोः) रक्षिता। (तस्य) अन्नम् इषवः। (शिष्टं पूर्ववत्)।।

शब्दार्थ :– (प्रतीची –च्याः) पश्चिम अथवा पीठ की ओर की (दिक्–शः) दिशा का (वरुणः) श्रेष्ठ (अधिपतिः) राजा (पृदाकुः–कोः) पृष्ठधारी प्राणी का (रक्षिता) रक्षक है, उस की (इषवः) शक्तियां (अन्नम्) अन्न हैं। आगे पूर्ववत्।।३।।

ओं उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः स्वजो रक्षिताऽशनिरिषवः तेभ्यो----- दध्मः।।४।।

अन्वय :– उदीची (उदीच्याः) दिक् (दिशः) सोमः अधिपतिः स्वजः रक्षिता। (तस्य) अशनिः इषवः। (शिष्टं पूर्ववत्)।।

पदार्थ :– (उदीची–च्याः) बाएं हाथ का अथवा उत्तर (दिक्–शः) दिशा का (सोमः) शान्ति–स्वरूप ओ३म् (अधिपतिः) राजा (स्वजः) (स्वस्मात् जायते भवति इति स्वजः स्वयंभूरीश्वरः, अथवा सुष्ठु प्रकारेण अजः अजन्मा इति स्वजः सुष्ठु अजन्मा) स्वयंभू अथवा भली प्रकार अजन्मा (रक्षिता) रक्षक है, उस की (अशनिः) बिजली (इषवः बाण) स्थानी हैं। आगे पूर्ववत्।।४।।

ओं ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपतिः कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः। तेभ्यो -- दध्मः।।५।।

अन्वयः– ध्रुवा (ध्रुवायाः) दिक् (दिशः) विष्णुः अधिपतिः रक्षिता (अस्ति, तस्य) कल्माषग्रीवः (कल्माषग्रीवा) वीरूधः इषवः। शिष्टं गतम्।

शब्दार्थ :– (ध्रुवायाः) नीचे की (दिक्–दिशः) दिशा का (विष्णुः) सर्वव्यापक (अधिपतिः) राजा ओ३म् (रक्षिता) रक्षक है। उसके (कल्माषग्रीवः – वाः) हरी गर्दन अर्थात् शाखाओं वाले (वीरूधः) पेड़ (इषवः) बाणस्थानी हैं। आगे पूर्ववत् ।।५।।

ओं ऊर्ध्वा दिग्बृहस्पतिरधिपतिः श्वित्रो रक्षिता वर्षमिषवः। तेभ्यो ----दध्मः।। ६।।

अन्वयः– उर्ध्वा (उर्ध्वायाः) दिक् (दिशः) बृहस्पतिः अधिपतिः श्वित्रः रक्षिता (अस्ति, तस्य) वर्ष इषवः शिष्टं पूर्ववत्।

शब्दार्थ :– (उर्ध्वा–ध्वायाः) ऊपर की (दिक्, शः) दिशा का (बृहस्पतिः) बड़ों का अथवा वाणी का स्वामी (श्वित्रः) पवित्र (रक्षिता) रक्षक है। उसकी (वर्ष) वर्षा (इषवः) बाणस्थानी है। आगे पूर्व के सदृश।।६।।

मनसा परिक्रमा का अर्थ मन द्वारा चक्कर काटना है। जिस–२ दिशा का वर्णन उपरिस्थ मंत्रों में हुआ, उस का चिन्तन करते हुए परमात्मा की सर्वव्यापकता का निश्चय करना चाहिए।

पौराणिक भाई सन्ध्या में एक स्थल पर शरीर द्वारा चक्र काटते हैं। मुख को पहिले पूर्व, फिर दक्षिण इत्यादि दिशाओं में फेर कर पूर्ण परिक्रमा करते हैं। चार दिशाओं में

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

प्रकृति का वरदान : तुलसी

तुलसी में कई दिव्य औषधीय गुण हैं। इसका स्वाद भले ही कुछ लोगों को पसंद न आए, लेकिन सेहत के लिए यह बहुत फायदेमंद है। खासतौर पर दिल के लिए इसे अत्यंत उपयोगी माना जाता है। तुलसी पित्तनाशक, वातनाशक, कुष्ठरोग निवारक, पसली में दर्द, खून में विकार, कफ और फोड़े फुन्सियों के उपचार में रामबाण की तरह लाभकारी है।

कड़वी और तीखी तुलसी सांस, कफ और हिचकी को तुरन्त मिटा देती है। उल्टी होने, दुर्गन्ध, कुष्ठ, विष का प्रभाव तथा मानसिक पीड़ा को मिटाने में बड़ी कारगर सिद्ध होती है। तुलसी की महत्ता के साक्ष्य में कई ऐतिहासिक पुस्तकों में वर्णन मिलता है। इसका प्रयोग वैद्यों द्वारा बहुत पहले से होता आया है।

जहाँ पर तुलसी के पौधे का आरोपण होगा वहाँ की वायु भी शुद्ध होगी और विषैले कीटाणु भी प्रभावहीन हो जाते हैं। यूनानी चिकित्सकों के मतानुसार तुलसी के सेवन से रोगाणु नष्ट होने लगते हैं। यह एक प्रकार की हृदय में शक्ति भर देने की महाऔषधि है। वायु को परिशोधित करने की शक्ति रखती है। वैद्यों की दृष्टि में इस पौधे में अनेक तरह के औषधीय गुण विद्यमान रहते हैं। एलोपैथी चिकित्सा प्रणाली में तो इसे सद्गुण सम्पन्न बताया गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि तुलसी में मलेरिया रोग को भगाने की शक्ति विद्यमान है। तुलसी सर्दी, खांसी, निमोनिया को नष्ट कर देती है।

स्वास्थ्य-संवर्धन की दृष्टि से तुलसी की गंध को अत्यधिक उपयोगी माना जाता है। इसकी पीली पत्तियों में हरे रंग के एक तैलीय पदार्थ की सत्ता समाहित है। हवा में इस औषधि के मिलने से कई कीटाणु समाप्त होते हैं। रात्रि को सोते समय यदि तुलसी व कपूर की हाथ-पैरों पर मालिश कर ली जाए तो मच्छर पास नहीं आयेंगे।

पानी में तुलसी डालकर प्रयोग करने से कई बीमारियाँ समाप्त होती हैं। तुलसी की पत्तियों को मिलाकर जल नित्य प्रति सेवन करने से मुखमण्डल का तेज निखर कर आता है। तुलसी का प्रयोग करने से स्मरणशक्ति बढ़ती है। तुलसी में एक विशेष प्रकार का एसिड पाया जाता है जो दुर्गन्ध को भगाता है। भोजन के पश्चात तुलसी की दो-चार पत्तियाँ चबा लेने से मुंह से दुर्गंध नही आती है।

दमा अथवा तपेदिक के रोगी को तुलसी की लकड़ी अपने पास सदैव रखनी चाहिए। तुलसी की माला पहनने से संक्रामक रोगों के फैलने का खतरा कम होता है। तुलसी विश्व प्रसिद्ध औषधि है और उच्चतम कोटि का रसायन है। तुलसी के प्रयोग से शरीर के सफेद दाग मिटते और सुन्दरता बढ़ती है क्योंकि इसमें रक्त शोधन क्षमता विद्यमान है। नींबू के रस में तुलसी की पत्तियों का रस मिलाकर चेहरे पर लगाया जाये तो चर्मरोग मिटता है और चेहरा खिलता है।

खुजली की घरेलू चिकित्सा

- शुष्क त्वचा के कारण होने वाली खुजली को दूध की क्रीम लगाने से कम किया जा सकता है।
- थोडा सा कपूर लेकर उसमें दो बड़े चम्मच नारियल का तेल मिलाकर खुजली वाले स्थान पर नियमित लगाने से खुजली मिट जाती है। हां, तेल को हल्का सा गरम करके ही कपूर में मिलाएँ।
- नींबू का रस बराबर मात्रा में अलसी के तेल के साथ मिलाकर खुजली वाली जगह पर मलने से हर तरह की खुजली से छुटकारा मिलता है।

मुंहासों पर कुछ प्रयोग

- चंदन- गोरी रंगत देने के अलावा यह एलर्जी और पिंपल को भी दूर करता है। पेस्ट बनाने के लिए चंदन पाउडर में 1 चम्मच नींबू और टमाटर का रस मिलाएं और पेस्ट को अपने चेहरे और गर्दन में अच्छी तरह से लगाकर थोड़ी देर बाद ठंडे पानी से धो लें।
- मुंहासों पर चंदन का पेस्ट लगाने से वे बैठ जाते हैं। लगातार इस्तेमाल से इनके निशान भी खत्म हो जाते हैं।

नीम के पानी की भाप लेने से मुंहासे धीरे-2 कम हो जाते हैं।

- बेसन और मट्ठे का पेस्ट व जायफल और दूध का पेस्ट चेहरे पर लगाने से भी मुंहासे कम होते हैं।
- नींबू, टमाटर का रस या कच्चा पपीता लगाने से भी लाभ होता है।
- अजवाइन पाउडर को दही में मिला कर चेहरे पर लगाएं। मुंहासों से छुटकारा मिलेगा।

जानते हो! -रवीश आर्य

❖ब्राजील की मान्यूमेंटल एक्सिस सड़क विश्व की सबसे चौड़ी सड़क है। इस पर १६० कारें एक साथ बराबर बराबर दौड़ सकती हैं।

❖जब चींटी बेहोश होती है तो वह दायीं ओर गिरती है।

❖पिल्ले के तीस और कुत्ते के बयालीस दांत होते हैं।

❖मनुष्य के औसत जीवन में पैदल चलने की दूरी पृथ्वी के तीन चक्कर काटने के बराबर होती है।

❖अब्राहम लिंकन की हत्या हुई थी और उनके कुत्ते की भी हत्या हुई थी।

❖पहली चार पहियों वाली कार १९०१ ई० में पनहार्ड ने बनाई थी।

❖पिछले ६,५०,००० वर्षों की तुलना में अब वातावरण में सबसे ज्यादा कार्बनडाई आक्साईड है।

❖पहली रंगीन फोटो १८६१ ई० में जेम्स मेक्सवेल ने बनाई थी।

❖पिस्सू अपनी ऊँचाई से १३० गुणा ऊँचा कूद सकता है।

हास्यम् -आस्था गुड्डू

❖मां- यह चीनी के डब्बे पर नमक क्यों लिखा?
आशु- चींटियों को धोखा देने के लिए।

❖पढ़ाई में अच्छा ना होने की वजह से मंगतलाल अपने बेटे पप्पू को हमेशा डांटता रहता था।
एक दिन पप्पू बोला- पापा मैं जब अपना व्यापार करूँगा तो देख लेना, अच्छे-अच्छों के हाथ में कटोरा पकड़ा दूँगा।
मंगतलाल ने हैरानी से पूछा- बेटा वो कैसे ?
बेटा मुस्कुराते हुए बोला- मैं गोल-गप्पे बेचा करूँगा।

❖आठ साल के एक बच्चे ने अपनी मां से पूछा- मम्मी, मैं कहां से मिला ?
बेटा--, मां बड़े प्यार से बोली- हम तुझे सुपर बाजार से खरीदकर लाए थे।
बेटा- जरूर उन दिनों वहाँ क्लियरेंस सेल लगी हुई होगी।
मां- कैसे जाना ?
बेटा- अपनी उंगलियों को देखकर जाना सब की सब अलग-अलग साइज की हैं। क्लियरेंस सेल में ही ऐसा माल बिकता है।

❖अनु-मैं दुनिया के बड़े-बड़े शहरों में घूम चुका हूं।
हर्षित-तब तो तुम्हें भूगोल का खूब ज्ञान होगा।
अनु-(शान से) हाँ, मैं वहाँ भी दो-तीन बार जा चुका हूँ।

बाल वाटिका

सम्पादक : सुमेधा

प्रहेलिका:

●जान हमारी देश के नाम
दुश्मन का करते काम तमाम,
हम न कभी पीठ दिखाते
युद्ध जीत झंडा फहराते।

●यहाँ नहीं, वहाँ नहीं-
बिकता है बाजार नहीं-
छीलो तो छिले नहीं-
फोड़ो तो गुठली नहीं-

●राजा जी के बाग में-
मोती गिरे अनेक,
रानी जो गई बीनने,
मोती मिला न एक--

●सात रंग की एक चटाई-
आकाश में पड़ी दिखाई-
सात रंग हैं मन को भाते-
देखकर बच्चे शोर मचाते।

सैनिक, ओला, ओस, इन्द्रधनुष

विचार कणिका: प्रतिभा बहन

♦ठीक ज्ञान के बिना अच्छे कर्म करना असंभव है।

♦ज्ञान- मनुष्य के श्रेष्ठ जीवन रूपी वृक्ष का मूल है।

♦दु:ख हमारे लिए एक पैमाना है, जिससे हम अपने सुख की कीमत का अन्दाजा लगा सकते हैं।

♦जब तुम पिता के कार्य के प्रकार को ठीक तरह समझ लोगे तब अनुभव करोगे कि पिता का कार्य कितना कठिन होता है।

♦लक्ष्य रहित मनुष्य जीवित रहकर भी मरे हुए के समान है।

♦बुद्धि का प्रयोग करके मनुष्य जंगल में मंगल बना सकता है।

♦जिस मनुष्य को किसी प्रकार का भय है वह ठीक ठीक विचार नहीं कर सकता।

♦यदि आप अपनी जिम्मेवारी खुद ले लेते हैं तो आप में अपने सपने सच करने की चाहत अपने आप विकसित हो जाएगी।

♦जब दुनिया कहती है कि हार मान लो तो आशा धीरे से कान में कहती है-एक बार फिर प्रयास करो और यही ठीक है।

प्रेरक-प्रसंग

पेन्सिल की कहानी

❒यज्ञदत्त आर्य

एक बालक अपनी दादी मां को पत्र लिखते हुए देख रहा था। अचानक उसने पूछा, 'दादी मां! क्या आप मेरी शरारतों के बारे में लिख रही हैं? आप मेरे बारे में लिख रही हैं ना?' यह सुनकर दादी माँ रुकीं और बोलीं, 'बेटा, मैं लिख तो तुझ्हारे बारे में ही रही हूँ, लेकिन जो शब्द मैं यहाँ लिख रही हूँ उनसे भी अधिक महत्व इस पेन्सिल का है जिसे मैं इस्तेमाल कर रही हूँ। मुझे पूरी आशा है कि जब तुम बड़े हो जाओगे तो ठीक इसी पेन्सिल की तरह होगे।'

यह सुनकर वह बालक थोड़ा चौंका और पेन्सिल की ओर ध्यान से देखने लगा, किन्तु उसे कोई विशेष बात नजर नहीं आयी। वह बोला, 'किन्तु मुझे तो यह पेन्सिल बाकी सभी पेन्सिलों की तरह ही दिखाई दे रही है।' इस पर दादी माँ ने उत्तर दिया, 'बेटा! यह इस पर निर्भर करता है कि तुम चीजों को किस नजर से देखते हो। इसमें पांच ऐसे गुण हैं, जिन्हें यदि तुम अपना लो तो तुम सदा इस संसार में शांतिपूर्वक रह सकते हो।'

'पहला गुण : तुझ्हारे भीतर महान से महान उपलब्धियाँ प्राप्त करने की योग्यता है, किन्तु तुझ्हें यह कभी भूलना नहीं चाहिए कि तुझ्हें एक ऐसे हाथ की आवश्यकता है जो निरन्तर तुझ्हारा मार्गदर्शन करे। हमारे लिए वह हाथ ईश्वर का हाथ है जो सदैव हमारा मार्गदर्शन करता रहता है।'

'दूसरा गुण : बेटा! लिखते, लिखते, बीच में मुझे रुकना पड़ता है और फिर कटर से पेन्सिल की नोक बनानी पड़ती है। इससे पेन्सिल को थोड़ा कष्ट तो होता है, किन्तु बाद में यह काफी तेज हो जाती है और अच्छी चलती है। इसलिए बेटा! तुझ्हें भी अपने दुखों, अपमान और हार को बर्दाश्त करना आना चाहिए, धैर्य से सहन करना आना चाहिए। ऐसा करने से तुम एक बेहतर मनुष्य बन जाओगे।'

'तीसरा गुण : बेटा! पेन्सिल हमेशा गलतियों को सुधारने के लिए रबर का प्रयोग करने की इजाजत देती है। इसका यह अर्थ है कि यदि हमसे कोई गलती हो गयी तो उसे सुधारना कोई गलत बात नहीं है। बल्कि ऐसा करने से हमें न्यायपूर्वक अपने लक्ष्यों की ओर निर्बाध रूप से बढ़ने में मदद मिलती है।'

'चौथा गुण : बेटा! एक पेन्सिल की कार्य प्रणाली में मुज्य भूमिका इसकी बाहरी लकड़ी की नहीं, अपितु इसके भीतर के ग्रेफाईट की होती है। ग्रेफाईट या लेड की गुणवत्ता जितनी अच्छी होगी, लेख उतना ही सुन्दर होगा। इसलिए बेटा! तुझ्हारे भीतर क्या हो रहा है, कैसे विचार चल रहे हैं, इसके प्रति सदा सजग रहो।'

'अंतिम गुण : बेटा! पेन्सिल सदा अपना निशान छोड़ देती है। ठीक इसी प्रकार तुम कुछ भी करते हो तो तुम भी अपना निशान छोड़ देते हो। अत: सदा ऐसे कर्म करो जिन पर तुझ्हें लज्जित न होना पड़े, अपितु तुझ्हारा और तुझ्हारे परिवार का सिर गर्व से उठा रहे। अत: अपने प्रत्येक कर्म के प्रति सजग रहो।'

क्या याद रखो

❒सुमेधा

एक व्यक्ति एक साधु के पास उपदेश सुनने के लिए जाता था। एक बार उसने महात्मा जी से कहा- 'महाराज मेरे मन में एक दुविधा है। मेरे भाई ने कई वर्ष पहले मुझे बहुत से अपशब्द कहकर मेरा अपमान किया था। मेरे मन में उसके प्रति बहुत कटुता है। मैं उससे बदला लेना चाहता हूँ। अब अगले मास उसके बेटे की शादी है। वह चाहता है कि मैं उसकी शादी में जाऊँ और उसे माफ कर दूँ। लेकिन महाराज मेरा उसें माफ करने का मन नहीं है। आप ही बताईये मैं क्या करूँ!' महात्मा जी उसकी बात सुनकर थोड़ा मुस्कराए। उन्होंने पूछा- 'अच्छा बताओ, परसों मैंने तुम्हें उपदेश में क्या कहा था?' उसने कहा 'महाराज यह तो मुझे याद नहीं।' महात्मा जी बोले- जरा प्रयास करो, याद करने की कोशिश करो। 'नहीं महाराज मुझे कुछ याद नहीं आ रहा।' इस पर साधु बोले- भले आदमी, परसों की बात तो तुम्हें याद नहीं है, और वर्षों की बात मन में लिए घूम रहे हो! इतना कहते ही उस व्यक्ति की आँखें खुल गई और वह अपने भाई से मिलने को तैयार हो गया।

वास्तव में हम बुरे व्यवहार को तो याद रखते हैं, अच्छे व्यवहार को भूल जाते हैं। मन में द्वेष रखने से अपना ही मन खराब होता है। सकारात्मक विचार रखने से हमारे तन मन स्वस्थ रहते हैं।

छोटा सा पत्थर

❐प्रमोद शर्मा

एक किसान था। उसके खेत में पत्थर का एक हिस्सा जमीन से ऊपर निकला हुआ था, जिससे ठोकर खाकर वह कई बार गिर चुका था और कितनी ही बार उससे टकराकर खेती के औजार भी टूट चुके थे।

रोजाना की तरह आज भी वह सुबह-सुबह खेती करने पहुँचा और इस बार भी वही हुआ। किसान का हल पत्थर से टकराकर टूट गया। किसान क्रोधित हो उठा और उसने निश्चय किया कि आज चाहे जो भी हो जाए वह इस चट्टान को जमीन से निकाल कर इस खेत के बाहर फैंक कर ही दम लेगा।

वह तुरंत गाँव से 4-5 लोगों को बुला लाया और सभी को लेकर वह उस पत्थर के पास पहुँचा और बोला,- 'यह देखो जमीन से निकले चट्टान के इस हिस्से ने मेरा बहुत नुक्सान किया है, और आज हम सभी को मिलकर इसे उखाड़कर खेत के बाहर फैंक देना है' और ऐसा कहते ही वह फावड़े से पत्थर के किनारे वार करने लगा। पर यह क्या! अभी उसने एक-दो बार ही मारा था कि पूरा-का पूरा पत्थर जमीन से बाहर निकल आया। साथ खड़े लोग भी अचरज में पड़ गए और उन्हीं में से एक ने हँसते हुए पूछा, 'क्यों भाई, तुम तो कहते थे कि तुह्मारे खेत के बीच में एक बड़ी सी चट्टान दबी हुई है, पर यह तो एक मामूली सा पत्थर निकला।'

किसान भी आश्चर्य में पड़ गया। सालों से जिसे वह एक भारी-भरकम चट्टान समझ रहा था, दरअसल वह बस एक छोटा सा पत्थर था! उसे पछतावा हुआ कि काश उसने पहले ही इसे निकालने का प्रयास किया होता तो न उसे इतना नुकसान उठाना पड़ता और न ही दोस्तों के सामने उसका मजाक बनता।

हम भी कई बार जिन्दगी में आने वाली छोटी-छोटी बाधाओं को बहुत बड़ा समझ लेते हैं और उनसे निपटने की बजाय तकलीफ उठाते रहते हैं। जरूरत इस बात की है कि हम बिना समय गंवाए उन मुसीबतों से लडें, और जब हम ऐसा करेंगे तो कुछ ही समय में चट्टान सी दिखने वाली समस्या एक छोटे से पत्थर के समान दिखने लगेगी जिसे हम आसानी से हल करके आगे बढ़ सकते हैं।

शत-शत वन्दन उन वीरों को

❐सहदेव समर्पित

सुन्दर धरती बने हमारी, हम सबका अरमान है।
देश बड़ा है, धर्म बड़ा है, बड़ा नहीं इंसान है।।

शत-शत वन्दन उन वीरों को, वीरों के विश्वास को।
देश धर्म के लिए जिन्होंने लिखा नये इतिहास को।।

वीरों की यह धरती हमको लगती स्वर्ग समान है।
देश बड़ा है, धर्म बड़ा है, बड़ा नहीं इंसान है।।

सच्चाई की राह चले जो, कितने कष्ट उठाते हैं।
युगों युगों तक लोग उन्हीं को अपना शीश झुकाते हैं।।

स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाता उनका बलिदान है।
देश बड़ा है धर्म बड़ा है, बड़ा नहीं इन्सान है।।

रोम-रोम में जिनके अन्दर भारत माँ का प्यार है।
जब-जब पड़े जरूरत मरने मिटने को तैयार है।।

दुनिया भर में सब से न्यारा अपना देश महान है।
देश बड़ा है, धर्म बड़ा है, बड़ा नहीं इंसान है।।

भक्त और भगवान

लेखक :
महाशय हरद्वारीलाल आर्य (महात्मा हरिदेव जी)
संस्थापक गुरुकुल सिंहपुरा, सुन्दरपुर रोहतक

दीन के दयाल स्वामी, मैं हूँ तेरा बाल स्वामी।
कर मेरी प्रतिपाल स्वामी शरण तेरी मैं आया हूँ।।

दु:ख विनाशक नाम तुम्हारा मेरे दु:ख भी दूर करो।
मेरे दु:ख भी दूर करो।
शील शांति से मन मेरा परमपिता भरपूर करो।
परमपिता भरपूर करो।
संशय भ्रम मिटाओ तुम- बुद्धि शुद्ध बनाओ तुम।
मार्ग ठीक बताओ तुम- ठगों ने बहकाया हूँ।।1।।

बहुत दिनों से फिरूँ भटकता पाया अब तक चैन नहीं।
पाया अब तक चैन नहीं।
बैल गधे की तरह कमाया, बैठा दिन और रैन नही।
बैठा दिन और रैन नहीं।
जीवन सब बेकार हुआ विषयों का शिकार हुआ
सभी तरह लाचार हुआ- रोया और पछताया हूँ।।2।।

विषय विकारों में फँस करके सब जीवन बरबाद किया।
सब जीवन बरबाद किया।
इतनी उम्र बीत ली स्वामी कभी तुझे ना याद किया।
कभी तुझे ना याद किया।
नए नए ढोंग बनाता रहा- दुनिया को बहकाता रहा।
लूट-लूट कर खाता रहा- नकली भक्त कहाया हूँ।।3।।

अब गुरुकृपा से ज्ञान हुआ सब अपनी भूल दिखाई दी।
अपनी भूल दिखाई दी।
दुनिया की संपत्ति सारी मिट्टी धूल दिखाई दी।
मिट्टी धूल दिखाई दी।
अब तेरे मिलन की आशा है-हरद्वारी दर्श का प्यासा है।
ये दुनिया अजब तमाशा है- जिससे मैं घबराया हूँ।।4।।

मेरे ओम नाम का जाप कर, दूर मन का पाप कर।
मेरे से जो मिलना चाहे पहले हृदय साफ कर।।1।।

कभी काशी कभी बद्रीनारायण जगन्नाथ पर जाता है।
जगन्नाथ पर जाता है।
पत्थर पूजे पीतल कूटे दर दर ठोकर खाता है।
दर दर ठोकर खाता है।
अन्दर ही तलाश कर- मेरे वेदों पर विश्वास कर।
मेरे से जो मिलना चाहे पहले हृदय साफ कर।।2।।

ईर्ष्या द्वेष हटाकर मन से सबका भला मनाया कर।
सब का भला मनाया कर।
सपने में भी कभी किसी को मतना कष्ट पहुँचाया कर।
मतना कष्ट पहुँचाया कर।
दुखियों से मिलाप कर दूर सब संताप कर।
मेरे से जो मिलना चाहे पहले हृदय साफ कर।।2।।

चोरी जारी निन्दा चुगली इनसे दूर हटा मन को।
इनसे दूर हटा मन को।
सेवा शुभ कर्मों में भाई अपने खूब लगा धन को।
अपने खूब लगा धन को।
शुभ गुण को धारण आप कर दूजे के दुर्गुण माफकर।
मेरे से जो मिलना चाहे पहले हृदय साफ कर।।3।।

हरद्वारीलाल कर ख्याल चाल जो मार्ग तुझे दिखाऊँ मैं।
मार्ग तुझे दिखाऊं मैं।
यम नियम का पालन कर फिर सहज तुझे मिल जाऊँ मैं।
सहज तुझे मिल जाऊं मैं।
नेक काम चुपचाप कर मत ज्यादा आलाप कर।।
मेरे से जो मिलना चाहे पहले हृदय साफ कर।।4।।

कर्णाटक में एक मास तक प्रचार हुआ

आर्य प्रतिनिधि सभा कर्णाटक के तत्वावधान में 1 महीने का वेद प्रचार का कार्यक्रम होशंगाबाद मध्य प्रदेश के आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी व दिल्ली के पंडित दिनेशदत्त आर्य जी के सान्निध्य में रखा गया। 4 जिलों के अनेक आर्यसमाजों, परिवारों व मंदिरों, बार कौंसिलों, जेलों, स्कूलों, मेडिकल कालेजों, महाविद्यालयों सहित अनेक व्यापारिक संस्थाओं में विशेष प्रोग्राम आयोजित किये गए। अल्प हिंदी भाषी मुस्लिम बहुल क्षेत्र के कर्णाटक वासियों के लिए यह एक नया प्रयोग था जो प्रभु कृपा से पूरी तरह सफल हुआ। रायचूर, गुलबर्गा, बीदर जिलों के लगभग 19-20 आर्यसमाजों में यज्ञ भजन प्रवचन रखे गए थे। अनेक स्थानों पर रात 11:30 बजे तक रूचिपूर्वक जनता उपदेश सुनती रही। आसपास के समस्त क्षेत्रों से लोग आते थे। रायचूर, गुलबर्गा, चिन्चोली, मन्नाय खेडी, हुड्सनाड, वरवट्टी, हल्लिखेड, जानापुर, आलंद, चिटगोप्पा, हुमनाबाद, भालकी, बीदर, मुधोडबी, तारना आदि स्थानों के बाद वासव कल्याण शहर के आर्यसमाज मदिर में पूर्णाहुति की गई। कार्यक्रम की अभूतपूर्व सफलता से प्रभावित होकर अनेक आर्यसमाजों की इच्छा थी कि इसे कुछ दिन के लिए बढ़ा दिया जावे पर विद्वानों की व्यस्तता आदि कारणों से ऐसा संभव न हो सका।

आर्य सुभाष आस्टीकर
मंत्री, कर्णाटक आर्य प्रतिनिधि सभा बंगलौर

कज़्प्यूटर इंटरनेट से घर बैठे

संस्कृत अध्येताओं के लिए व्याकरण महाभाष्य पढ़ने का सुअवसर

आर्य जगत् के सुयोग्य युवा विद्वान मनीषी आचार्य श्री सनत कुमार जी (जयपुर) व्याकरण महाभाष्य की कक्षा 20 सितज़्बर 2013 से प्रारंभ कर चुके हैं। लगभग 15 विद्यार्थी इसमें बैठ रहे हैं। इसमें यथोचित योग्यता वाले छात्र-छात्रायें, आचार्य, गुरुकुल आदि संस्थायें जिज्ञासुजन निःशुल्क सज़्मिलित हो सकते हैं।
कक्षा का समय प्रतिदिन भारतीय समय अनुसार दोपहर 3:30 से 5 बजे तक
स्थान सीमित होने से शीघ्र संपर्क करें .
Email : kumarnavam@gmail.com
Skype : kumar3336

प्रांतीय आर्यमहासम्मेलन ८ दिसम्बर को

-काप्र

जींद, महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम ३७०५ अर्बन एस्टेट जींद में आयोजित होने वाला वार्षिक आर्यमहासम्मेलन इस बार ८ दिसम्बर २०१३ को मनाया जाएगा। उक्त घोषणा हरियाणा नशाबंदी परिषद के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी ने आश्रम में आयोजित एक कार्यक्रम में की। स्वामी जी के अनुसार इस सम्मेलन में अनेक प्रसिद्ध आर्य संन्यासी, विद्वान् उपदेशक व नेता सम्मिलित होंगे। उन्होंने बताया कि यह महासम्मेलन स्वामी श्रद्धानन्द और पं० रामप्रसाद बिस्मिल की स्मृति में मनाया जाएगा जिसमें कन्या भ्रूण हत्या, अंधविश्वास व नशाखोरी कि विरुद्ध जन जागरण किया जाएगा।

शोक समाचार

स्व० महाशय हरिदत्त जी (द्वारका) की धर्मपत्नी श्रीमती परमेश्वरी देवी का गत ८ सितम्बर को ८१ वर्ष की अवस्था में निधन हो गया। यह समाचार सुनकर सभी परिजन, आर्यसमाज सांघी के सदस्यों तथा परिचितों को बड़ा आघात पहुंचा। श्रीमती परमेश्वरी देवी एक अत्यंत श्रद्धालु, धर्मपरायण व उत्तम संस्कारों से ओतप्रोत महिला थीं। उन्होंने अपने सद्विचार और आचरण से पूरे परिवार को उत्तम संस्कार दिए। इसी कारण इस परिवार का दिल्ली रहते हुए भी पैतृक गांव सांघी से विशेष संबंध रहा। महाशय हरिदत्त जी के बड़े भाई चौ० चन्दनसिंह जी पूर्व तहसीलदार डी ए वी स्कूल सांघी के संस्थापकों में से थे। आप ग्राम सुधार समिति के कर्त्ता धर्ता भी थे। उनके कार्यों के कारण लोग उन्हें अब भी याद करते हैं। ११ सितम्बर को परमेश्वरी देवी की स्मृति में शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसमें आसपास व दूरदराज से परिजनों व आर्यजनों ने श्रद्धासुमन अर्पित किये। परिवार ने आर्यसमाज सांघी के लिए १,२०,००० रूपये की स्थिर-निधि बनवाकर प्रचार हेतु संकल्प किया। तथा भविष्य में भी पूर्वजों की भांति धार्मिक कार्यों में पूरा सहयोग करने का आश्वासन दिया। उनकी स्मृति में विद्यालय में त्रिवेणी भी लगाई गई। श्री सतपाल, अनिल, जोगेन्द्र सिंह, ओमप्रकाश, भलेराम और नरेन्द्रसिंह सहित अनेक गणमान्य लोगों ने परमात्मा से प्रार्थना की कि परिवार को उनके आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दे व यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करे। **-देवेन्द्रसिह आर्य**

आर्यसमाज पंचकूला का वार्षिकोत्सव सज़्पन्न

13 से 15 सितज़्बर 2013 तक आर्यसमाज सेक्टर 20 पंचकूला का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा होशंगाबाद मध्य प्रदेश के युवा विद्वान आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी जी थे, जिन्होंने वेद मन्त्रों के आधार पर अलग अलग सत्रों में ईश्वर, कर्मफल व्यवस्था, गौमाता, यज्ञ व राष्ट्र जैसे विषयों की विस्तार से व्याज़्या की। भजनोपदेशक के रूप में श्री विजय भूषण आर्य जी ने सिद्धांतनिष्ठ मधुर भजनों से लोगों का मन मोह लिया। श्री नरेंद्र आहूजा विवेक जी का भी राष्ट्रविषयक व्याज़्यान अंतिम दिन रखा गया था। वातानुकूलित बड़े हाल में 15 सितज़्बर को समापन के बृहत् कार्यक्रम में पंचकूला नगर निगम की अध्यक्षा श्रीमती उपेन्द्र अहलूवालिया व उनके पतिदेव कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री धनेन्द्र जी उपस्थित थे। उन्होंने हरयाणा के मुज़्यमंत्री जी से मिलकर आर्यसमाज के लिए जमीन दिलवाने का आश्वासन दिया। निर्धन परिवारों के बच्चों के लिए एक सायंकालीन निशुल्क कोचिंग आर्यसमाज चलाता है, जिसमें बच्चों की संज़्या 175 के लगभग है। प्रधान डॉ0 श्रीमती रजनी थरेजा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंत्री श्री ओमप्रकाश गुगलानी जी ने मंच सञ्चालन किया। वेदपाठी श्री परमेश्वर शास्त्री एवं श्री रामप्रसाद शास्त्री जी थे। द गुरुकुल इंग्लिश मीडियम स्कूल की तरफ से ऋषि लंगर की व्यवस्था की गई। -**ओमप्रकाश गुगलानी,** मंत्री आर्यसमाज

मनसा परिक्रमा- पृष्ठ २४ का शेष

ऐसा हो सकता है। उपर नीचे के लिए कलाबाजी कर लिया करें तो क्रिया की पूर्ण सिद्धि होगी।

आर्यसमाज में कहीं-२ इस बात पर बल दिया जा रहा है कि सन्ध्या में पूर्वाभिमुख बैठो। इस में कुछ युक्तियां भी दी जाती हैं। जैसे उदय होते सूर्य का दर्शन, जिस से आत्मिक जीवन सुवर्णमय हो जाता है। परन्तु स्वामीजी ने पंच महायज्ञविधि में प्राची दिशा का अर्थ पूर्व अथवा वह दिशा जो मुख के सामने हो, किया है। पूर्वाभिमुख सन्ध्या से जो लाभ बताए जाते हैं, वह दूसरी दिशाओं में भी प्राप्त हो सकते हैं। सन्ध्या में दिशा का बंन्धन नहीं। विशेषतया जब सन्ध्या में हो तो बैठने का यह नियम नहीं हो सकता।

इसलामी भाई नमाज में पश्चिमाभिमुख खड़े होते हैं। पंक्ति के पीछे पंक्ति सुन्दर प्रतीत होती है। आर्यों में बैठने के क्रम का निम्नलिखित नियम अच्छा होगा। सामूहिक सन्ध्या मे अग्रणी का आसन एक ओर रहना चाहिए, शेष लोगों की एक पंक्ति उसके चारों ओर भवन अथवा स्थान की सीमा पर लग जानी चाहिए। इस से अधिक जो लोग हों, उन की पंक्तियाँ अग्रणी की ओर मुख किये उसके सामने लग जायें, तो एक सुन्दर क्रम बन जायगा। स्थान तथा समय के अनुसार क्रम बदला जा सकता है। ऐसे ही सामूहिक हवन इत्यादि में भी कोई सा क्रम रखना चाहिए।

मुजफ्फर नगर-- पृष्ठ १२ का शेष

घटनाओं का संज्ञान लेना पड़ा था। उसे जब-तब शिक्षा, सेहत, पर्यावरण और यहां तक कि आर्थिक और राजनीतिक मामलों में भी संज्ञान लेना पड़ता है। इन बातों से तो यही स्पष्ट होता है कि हमारे लोकतंत्र के अन्य स्तंभ और संस्थाएं लगातार कमजोर होती चली जा रही हैं? इतना सब कुछ करने के बाद भी राजनीतिक दलों और यहां तक कि केंद्र और राज्य सरकारों को जब भी मौका मिलता है वे न्यायपालिका की लोक कल्याणकारी सक्रियता को उसकी अति सक्रियता करार देकर आपत्ति जताने का कोई मौका नहीं छोड़तीं।

मुजफ़्फ़रनगर की घटना ने अनेक मूल प्रश्न देश के सामने छोड़े हैं जिन पर तुरंत कार्यवाही की आवश्यकता है-

1- लव जिहाद को पूरी तरह से प्रतिबन्धित करते हुए इसके विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की व्यवस्था हो।

2- जो दंगाई पुलिस ने लखनऊ से फोन आने पर छोड़ दिए थे उन सभी को अबिलंब गिरफ़्तार कर कड़ी सजा दिलाई जाए।

3- जिस राजनेता या प्रशासनिक अधिकारी के कहने पर पुलिस को दंगाईयों के विरुद्ध कार्यवाही से रोका गया, उसे भी गिरफ़्तार कर दंगाईयों से भी कड़ी सजा दिलाई जाए जिससे भविष्य में कोई कानून के रक्षकों को भक्षक बनाने की जुर्रत न कर सके।

4- चुनावों में जाति या धर्माधारित आंकड़ों के प्रकाशन या प्रसारण तथा राज नेताओं द्वारा इसके प्रयोग पर पूरी तरह प्रतिबन्ध लगे जिससे कोई भी राजनेता देश की भोली भाली जनता को जाति या धर्म के आधार पर न बांट सके।

5- दंगों का सच जनता के समक्ष रखने वाले पुलिस या प्रशासनिक अधिकारियों के स्थानांतरण, निलम्बन, सस्पेंशन को निरस्त कर उन नेताओं को गिरफ़्तार किया जाए जो दंगे रोकने में नाकाम रहे।

6- न्यायपालिका की बेवजह आलोचना करने की बजाय सरकारें अपने-अपने दायित्वों को पूरा करें और न्यायपालिका के विभिन्न दिशा-निर्देशों पर अमल करें।

7- यदि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा पुलिस सुधारों के संदर्भ में दिए गए निर्देशों पर अमल किया जाता तो शायद मुजफ़्फ़रनगर में जो अनर्थ हो रहा है, उससे बचा जा सकता था।

प्रतीक्षा-- पृष्ठ २२ का शेष

बैठ गये। दोनो एक दूसरे को देखकर विस्मित हो रहे थे। किसी से कुछ भी बोला न जा सका। कुछ संभल कर श्रीकान्त ने सहारा देकर उसे उठाया और घर के अन्दर ले आया। सुचित्रा की दशा का वर्णन करना सभंव नहीं है। इस समय दोनों बेटे उन्हें देखकर आश्चर्य चकित थे। सुचित्रा ने कहा, देखो! तुम्हारे दोनो बेटे, उनकी पत्नियाँ एवं तुम्हारी पुत्री भी साथ हैं। तुम तो छोटे-२ छोड़ कर गये थे, अब ये स्वयं माता-पिता बन गये हैं। श्रीकान्त ने सबको एक साथ गले से लगा लिया। सब की आंखों से आंसुओं की धारा बह रही थी। कुछ देर के पश्चात् जब सब सम्भले तो सुचित्रा ने पूछा, कि इतने दिन तक तुम कहाँ फंसे रहे? श्रीकान्त ने कहा, 'मैं युद्ध में बंदी बना लिया गया था। शत्रु के कारागार में था। अभी कुछ दिन पहले ही छोड़ा गया तो सीधा घर पर पहुँचा। मुझे पक्का विश्वास था कि मैं तुम से अवश्य मिलूँगा।"

सुचित्रा ने एक बार श्रीकान्त की ओर देखकर कहा, 'तुम आ गये हो, अब मेरा कार्य समाप्त है, मेरा चलने का समय हो गया है, तुम्हें देखना था सो देख लिया, अब मैं चलती हूँ।' इससे पहले कि श्रीकान्त कुछ कहे, उसकी गर्दन एक ओर लुढ़क गई। श्रीकान्त उसका हाथ पकड़े उसकी ओर देखता रहा।

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी द्वारा

हिन्दी साहित्य पुरस्कारों की घोषणा

गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (बोहल) भिवानी द्वारा आयोजित हिन्दी साहित्यकार पुरस्कार योजना के अन्तर्गत निर्णायक मण्डल/कार्यकारिणी द्वारा वर्ष २००६ से २०१२ हेतु निम्न विद्वानों की पुस्तकों का चयन किया गया है।

वर्ष २००६-

● श्री गुगनराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मान :- डॉ॰ राधाकृष्ण गणेशन्, वाराणसी की पुस्तक 'भारत के विविध संग्रहालय'

●श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मान :- श्री राधेमोहन राय, अलवर की पुस्तक 'मन बुढ़ाता नहीं' भाग १ व २ (आत्मकथा)

●श्रीमती रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ॰ पुष्पलता, मुजफरनगर की पुस्तक 'अरे बाबुल काहे को मारे।' (कविता)

❖प्रशस्ति पत्र- श्री नाथूराम शर्मा, झांसी की पुस्तक 'विपश्यना' (कविता संग्रह) को दिया गया है।

वर्ष २००७-

● श्री गुगनराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ॰ रमेश मोहन शर्मा 'भागलपुर की पुस्तक 'अंगिरा भाषा का ध्वनि वैज्ञानिक अध्ययन' (शोध प्रबंध)

● श्रीमति गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मानः- सूबेदार धर्मसिंह मोहम्मदपुर माजरा, झज्जर की पुस्तक 'रिश्तों की तपिश' (कहानी संग्रह)।

● श्रीमति रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- आचार्य सोहनलाल रामरंग दिल्ली की पुस्तक 'स्वातंत्र्य संग्राम सत्र' (स्वतन्त्रता सेनानियों की जीवनियां)

❖प्रशस्ति पत्रः- हेमसिंह चौधरी एडवोकेट नागौर की पुस्तक 'नशा मुक्त समाज स्वस्थ समाज', डॉ॰ रमेश दत्त मिश्र फैजाबाद की पुस्तक 'मेरी गंगा' (कविता संग्रह), श्री आर॰ एल॰ दीपक मालपुरा, टोंक की पुस्तक 'दीपांजलि (दोहा संग्रह) व श्री रणछोड़ दास बैरागी 'मृत्युंजय' इन्दौर की पुस्तक 'चैतन्य राष्ट्र भारत (कविता संग्रह) को दिया गया।

वर्ष २००८-

● श्री गुगनराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- आचार्य सोहनलाल रामरंग, दिल्ली की पुस्तक उत्तर साकेत (प्रथम व द्वितीय खण्ड संयुक्त) (महाकाव्य)

● श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ॰ पी॰ सी॰ कौडल मण्डी की पुस्तक करमों का बन्धन (उपन्यास)

● श्रीमती रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ॰ अशोक 'गुलशन' बहराइच की पुस्तक साँसों की समिधाएं (कविता) व श्री सत्यव्रत सिंह, कैसरगंज, बहराइच की पुस्तक 'मुट्ठी भर जल (कविता)

❖ प्रशस्ति पत्र :- श्री अनिल 'पतंग' बेगूसराय की पुस्तक-'लोक कथा रूपक खण्ड एक' (नाटक) व एन॰ लक्ष्मी अय्यर जयपुर की पुस्तक 'हिन्दी कृष्ण भक्ति' काव्य व आलवार काव्य में भक्ति को दिया गया।

वर्ष २००९-

● श्री गुगनराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- साहित्य श्री शिवराम उपाध्याय 'मुकुल' इलाहाबाद की पुस्तक 'मतवाला (महाकाव्य), श्री जवाहर लाल 'मधुकर' चैन्ने की पुस्तक 'जीवन रेखा (नाटक) व श्री गोविन्द शर्मा संगरिया की पुस्तक 'दोस्ती का रंग (बाल कहानियां)

● श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ॰ बीना बुदकी (जम्मू कश्मीर) की पुस्तक 'अवधी तथा कश्मीरी लोकगीतों में लोक तत्व' (शोध), श्री सत्यनारायण 'सत्य' भीलवाड़ा की पुस्तक 'दिन आए फिर छुट्टी वाले' (बाल काव्य) व श्री घमंडी लाल अग्रवाल, गुड़गांव की पुस्तक 'चुप्पी की पाजेब' (दोहा)

● श्रीमती रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- श्री गोविन्द भारद्वाज, अजमेर की पुस्तक सूरज का सन्देश (बाल साहित्य) व डॉ॰ बानो सरताज चन्द्रपुर की पुस्तक उर्दू शायरी में भारतीयता (शोध लेख, निबंध)

❖ प्रशस्ति पत्र :- श्री रामगोपाल राही-बून्दी की पुस्तक 'भारत प्यारा देश हमारा' (बाल साहित्य) व श्रीमती प्रेरणा सारवान अजमेर की पुस्तक 'मेरे कमरे के तीन कोने' (कविता)

वर्ष २०१०-

● श्री गुगनराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- श्री शिवानन्द सिंह 'सहयोगी' मेरठ की पुस्तक 'बिखरा आसमान (कविता) प्रो॰ शामलाल कौशल, रोहतक की पुस्तक 'जीना एक कला है (निबंध) व डॉ॰ दोड्डा शेषु बाबु गुटूर हैदराबाद की पुस्तक 'प्रगतिशील आलोचना एवं हिन्दी कविता।

● श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मानः- श्री एम०डी० मिश्रा 'आनन्द', टीकमगढ की पुस्तक 'इन्द्र धनुष के रंग जीवन के संग (कहानी संग्रह)- व श्री माणक तुलसीदास गौड, मुम्बई की 'भरोसा (बाल कहानी)।

●श्रीमती रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- श्री दिनेश चन्द्र दुबे ग्वालियर की पुस्तक 'बुझे हुए चिराग (कहानी संग्रह)

प्रशस्ति पत्रः- श्री महेशचन्द्र द्विवेदी लखनऊ की पुस्तक 'लव जिहाद (कहानी) व श्री मनुस्वामी-मुजफरनगर की पुस्तक 'बक्से में धूप (कविता) को दिया गया।

वर्ष २०११-

● श्री गुगनराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ० सुशील गुरू भोपाल की पुस्तक 'नेह क्लश (बाल काव्य), रोहित यादव मण्डी अटेली की पुस्तक वनस्पति जगत के दोहे, श्री राजेन्द्र पाराशर दिल्ली की पुस्तक-ग़ज़ल प्रवेशिका (शोध) व डॉ० सुधा शर्मा 'पुष्प' दिल्ली की पुस्तक नाथूराम शर्मा 'शंकर' व रामदेवी प्रसाद पूर्ण की काव्य दृष्टि (तुलनात्मक अध्ययन)

●श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ० महेन्द्र अग्रवाल शिवपुरी की पुस्तक 'गजल और नई गजल (शोध), डॉ० तारा सिंह बम्बई की पुस्तक 'समर्पिता (कविता), श्री राजेन्द्र नटखट दिल्ली की 'पुस्तक त्रिपदीय गीता : वर्तमान संदर्भ (काव्य) को दिया गया।

●श्रीमती रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- श्रीमती रजनी सिंह डिबाई की पुस्तक 'भूमिजा-भूमिका (महाकाव्य), श्री कुशलेन्द्र श्रीवास्तव नरसिंहपुर की पुस्तक 'डूबती लकीरें (कहानी) व श्रीमती सुरेखा शर्मा गुड़गांव की पुस्तक 'रिश्तों का एहसास (कहानी)

❖ प्रशस्ति पत्रः- श्री देवेन्द्र कुमार मिश्रा छिन्दवाड़ा की पुस्तक 'जीभर के जीना (कविता), श्रीमती नीरजा द्विवेदी लखनऊ की पुस्तक 'स्मृति मजूंषा (यात्रा संस्मरण), डॉ० मालती दुबे अहमदाबाद, की पुस्तक सुधियों की सुंगंध (कविता) व अखिलेश कुमार शर्मा करौली की पुस्तक 'कमल करे अभिषेक (कविता) को दिया गया।

वर्ष २०१२-

● श्री गुगनराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ० उदय प्रतापसिंह वाराणसी 'सामाजिक व्यवस्था में संत कवियों का योग' (शोध) व श्री बस्तीराम 'बस्ती' मंडी अटेली की पुस्तक 'जीवन का सच (कहानी)।

●श्रीमती गिना देवी स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ० राजकुमारी शर्मा नई दिल्ली की पुस्तक- 'समकालीन महिला उपन्यास कारों के उपन्यासों में मूल्यबोध (शोध), श्रीमती लक्ष्मी रूपल-मोहाली की पुस्तक 'मोहे बिटिया दीजै (कहानी) व कमलचंद वर्मा-महू छावनी की पुस्तक 'अँतिम निर्णय' (कहानी)।

●श्रीमती रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति साहित्य सम्मानः- डॉ० मनोहर दास अग्रावत जावद की पुस्तक 'जीवन रक्षा , स्वास्थ्य चिकित्सा, डॉ० मथुरेश नन्दन कुलश्रेष्ठ जयपुर की पुस्तक 'अनुपस्थिति रचनाकार की तथा अन्य निबंध'।

❖प्रशस्ति पत्रः- डॉ० मनीमने वर साहू 'ध्येय' धमतरी की पुस्तक 'तोर अंगना' (कविता), श्रीमती ममता किरण नई दिल्ली की पुस्तक 'वृक्ष था हरा-भरा' (कविता), श्रीमती सपना मांगलिक आगरा की पुस्तक 'कल क्या होगा (कविता), डॉ० अनु गौड़ पटियाला 'यत्र-तत्र सर्वत्र' (कविता), डॉ० रवि शर्मा 'मधुप' दिल्ली की पुस्तक 'एक पत्थर तो तबियत से उछालो यारो', कुमारी सुरम्या शर्मा दिल्ली की पुस्तक 'मिट्टी का कर्ज़ (कहानी), आर्य प्रहलाद गिरि-आसन सोल की पुस्तक श्री सत्यनारायण व्रत पोथी, श्री राम आसरे गोयल 'शशि' हापुड़ की पुस्तक 'स्वगंधे (कविता), श्री अनुपिन्द्र सिंह 'अनूप' पानीपत की पुस्तक 'आस के बूटे (कविता) व श्री हीरालाल साहनी, दरभंगा की पुस्तक 'लीक से परे (कहानी), श्रीमति हरकीरत हीर- गुवाहाटी की पुस्तक 'दर्द की महक (कविता) को दिया गया।

नोट :

●श्री गुगनराम सिहाग स्मृति सम्मान व श्रीमती गिना देवी स्मृति सम्मान के तहत प्रत्येक लेखक को सोसायटी की तरफ से ११११/- रुपये नकद व प्रशस्ति पत्र दिया गया।

●श्रीमती रज्जीदेवी नन्दाराम सिहाग स्मृति सम्मान के तहत प्रत्येक लेखक को सोसायटी की ओर से ११००/- रू० नकद व सम्मान पत्र दिया गया।

सचिव नरेश सिहाग एडवोकेट,
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी
२०२, सोसायटी भवन
पुराना हाऊसिंह बोर्ड भिवानी-१२७०२१

सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक चन्द्रभानु आर्य द्वारा अपने स्वामित्व में, ऑटोमैटिक ऑफसैट प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६ १०२ (हरि०) से २४-६-२०१३ को प्रकाशित।

।।ओ३म्।।

स्वामी भीष्म जी महाराज के शिष्य उत्तर भारत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक

पं० चन्द्रभान आर्य

की चुनी हुई रचनाओं का संकलन

(हरियाणा साहित्य अकादमी के सौजन्य से प्रकाशित)

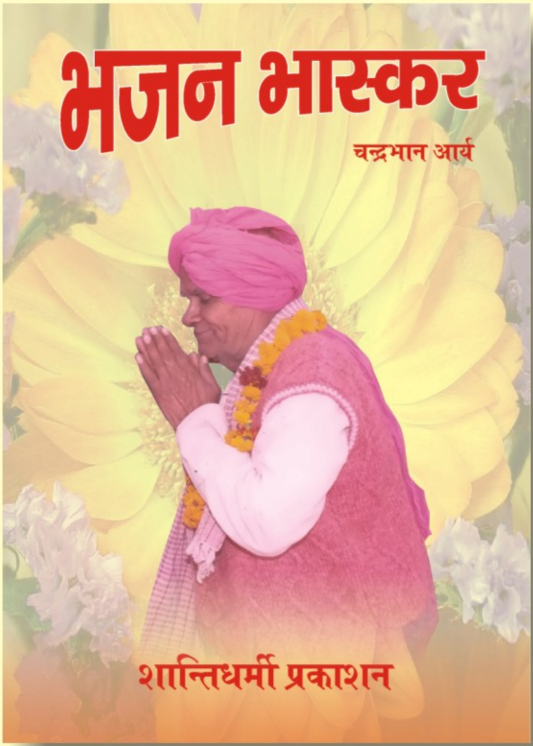

भजन भास्कर

❖भक्ति ❖प्रेरणा ❖शौर्य ❖नारी, चार सर्गों में विभक्त

पृष्ठ : 98, मूल्य : ₹80 (अस्सी रुपये) केवल
पंजीकृत डाक से मंगवाने के लिए मूल्य अग्रिम भेजें।

प्राप्ति स्थान

शांतिधर्मी प्रकाशन

756/3 आदर्श नगर सुभाष चौक जींद-126102 (हरयाणा)

दूरभाष : 80596 64340, 94162 53826

ओ३म्

सहयोग सेवा संस्कार समर्पण समानता

जनहित विकास परिषद् हरियाणा (रजि.)

गैर राजनैतिक सामाजिक संगठन

सामाजिक कार्यों और राष्ट्रभक्ति के लिए सदस्य बनें।

मुख्यालय

निकट जाट कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
रेलवे रोड, पटियाला चौक, जींद-126102

सभी देशवासियों को विजयादसमी
दशहरा पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ।

आईये हम सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध
विजय अभियान का श्रीगणेश करें।

संयोजक
केवल सिंह जुलानी
9416511588

अध्यक्ष
प्रदीप बड़ौदी
9466234207

उपप्रधान
नरेन्द्र छापड़ा
9467682295

महासचिव
सत्यवान सांगवान
9416519424